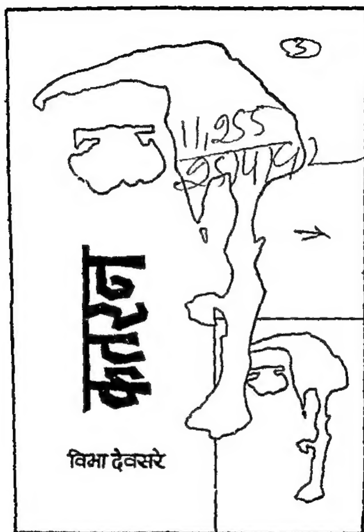
कतरन

[कहानी-संग्रह]

विभा देवसरे



नालंदा प्रकाशन, नई दिल्ली–110030

संस्करण
1990

प्रकाशक
नालंदा प्रकाशन
भूलभुलैयाँ रोड, महरौली
नई दिल्ली 110030

मुद्रक
हरिकृष्ण प्रिण्टर्स
शिवाजी पार्क, शाहदरा
दिल्ली-110032

मूल्य
30 00

Katran
(a collection of Hindi Short stories)
by Vibha devasarey

कतरन

[कहानी-संग्रह]

कहानी-क्रम

KATRAN
[Collection of Short Stories in Hindi]

हर शनिवार

उस कॉलोनी में मार्गरेट विलियम का आना ससार के आठवें आश्चर्य जैसा ही था मार्गरेट विलियम सबके लिए अजूबा थी—सिर्फ अजूबा उनके आते ही पूरे महल्ले में तहलका मच गया था इत्तफाक से उस पूरी कॉलोनी में वही एक ऐसा घर था, जिसका मालिक दिल्ली से दूर मद्रास मे रहता था चर्चा यह थी कि मार्गरेट विलियम मद्रास से ही आयी थी और मालिक-मकान ने वही उनसे 'एडवास' लेकर चाभी सहित उन्हें मकान दे दिया था नही तो अरसे से मकान मे ताला पडा था गरमी की छुट्टियो में तो मकान अखाडा बना रहता चहार-दीवारी से कूदकर बच्चे अमरूद तोड ले जाते महल्ले के बच्चों की टीमो मे होड सी बनी रहती कि कौन जाकर पहले उस अमरूद वाले घर मे अड्डा जमाता है 'रिजर्वेशन' के बतौर कोई बच्चा अपनी टीम की निशानी छोड आता फिर घटों उस जगह पर उनका कब्जा बना रहता, लेकिन जब से मार्गरेट विलियम उस घर मे आ गयी थी, किसी की हिम्मत नही होती कि फाटक खोलकर अदर घुस आए यों भी मार्गरेट विलियम ने गेट पर तख्ती टाग रखी थी, 'कुत्ते से सावधान' सुबह-शाम मार्गरेट विलियम स्वय ही अपने कुत्ते को लेकर बाहर निकलती

मार्गरेट विलियम को छुपे-छिपे देखना सभी को अच्छा लगता पूरा ऊचा कद, चपई रग, 'स्टाइल' से सवरे 'बॉब्ड हेयर', और छरहरा बदन तीखा नाक-नक्श उम्र लगभग तीस-पतीस के आस-पास महल्ले के कुछ पुरुषों ने तो अपनी 'शेविंग' का समय भी तय कर रखा था मार्गरेट विलियम जैसे ही कुत्ते को लेकर बाहर निकलतीं, लोग अपनी खिडकियों मे या बेड़े मे आ जाते, और 'शेव' करने लगते श्रीमती चोपडा और श्रीमती कपूर को तो यो भी अपने-अपने पतियों पर कडी निगरानी रखनी

पड़ती थी मार्गरेट विलियम के आने से उनका हाजमा कुछ ज्यादा ही बिगड़ा रहता था साथ काम का दबाव रहता, बच्चे स्कूल के लिए देर से तैयार होते, पति को लंच देने के लिए एक ही सब्जी बन पाती, किंतु अपने पति को मार्गरेट विलियम से बचाने के लिए वे बार-बार 'किचन' से आना न भूलतीं जैसे ही मार्गरेट विलियम के घर का द्वार खुलता, श्रीमती चोपड़ा और श्रीमती कपूर चौकन्नी हो जातीं और अपने-अपने पतियों पर बड़ी मुस्तैदी से कड़ा पहरा देने लगतीं

कॉलोनी की इस नई चकल्लस से अगर किसी को लाभ हो रहा था, तो वह थी—सुल्लो सुल्लो घरेलू काम करने वाली नौकरानी थी वह सिर्फ उन्हीं घरों में काम करती थी, जिनमें खाना 'गैस' पर पकता हो, 'फ्रिज' का ठंडा पानी पीने को मिलता हो और शाम के समय मनोरंजन के लिए 'टी वी' देखने में कोई रोक-टोक न हो अगर सुल्लो को अपने इस 'स्टैंडर्ड' के मुताबिक कोई ग्राहक न मिलता, तो वह वहां का काम करना मंजूर न करती लेकिन मार्गरेट विलियम के आने के बाद, सुल्लो माई की बड़ी खातिर होने लगी थी सबने उसे 'इन्फॉरमेशन ऑफिसर' बना लिया था उससे ताजी-ताजी खबरें जान लेने के लिए सभी उत्सुक रहते कॉलोनी की मुखिया श्रीमती सेठ उसे गरमागरम चाय और पराठे भी खिलातीं सुल्लो के भी नाज नखरे, अदा और अदाज में फर्क आता जा रहा था नयी मालकिन मार्गरेट विलियम के घर काम करने से मानो उसकी किस्मत की लाटरी खुल गयी थी सुबह मुंह अंधेरे सुल्लो, मार्गरेट विलियम की सेवा में हाजिर हो जाती 'बेड टी' भी मार्गरेट विलियम सुल्लो के ही हाथ से लेती दो तीन महीनों में ही सुल्लो मार्गरेट विलियम के उतारे कपड़ों में चमकने लगी थी

सुल्लो के लिए एक मिसेज सेठ ही ऐसी थीं जिनकी कोठी और मोटर रुतबा सुल्लो को कुछ विनम्र बना देता फिर मिसेज सेठ ने आड़े वक्त पर सुल्लो की मदद भी कुछ कम नहीं की थी सभी जानते थे कि मिसेज सेठ गरीबों की हमदर्द हैं आड़े वक्त पर झुग्गी झोपड़ी वालों को उधार देती हैं जो उधार चुकता नहीं कर पाता है, वह रुपयों के ऐवज में महीनों उनके घर चार-छह घंटे काम कर आता है सुल्लो भी कर्ज से दबी थी, पर भला

हो इन मेम साहब का, जिनकी कृपा से वह मिसेज सेठ का दो सौ रुपया चुका आयी और तो और अब सुल्लो सारे मुहल्ले मे भटक भटककर काम नही करती सिर्फ मार्गरेट विलियम के घर सुबह से शाम तक लगी रहती है मागरेट विलियम के आफिस जाने के बाद ग्यारह बजे से लेकर शाम के छह बजे तक सुल्लो ही उस घर की मालकिन होती है मागरेट विलियम के खुशबूदार 'शॅपू' और साबुन का इस्तेमाल कर घटो 'ड्रेसिंग टेबल' पर 'क्रीम' कभी 'पाउडर' और कभी 'लिपिस्टिक' का इस्तेमाल करती है फिर एक दो घटे मागरेट विलियम के गुदगुदे बिस्तर पर सोती है भीनी-भीनी सुगध से महकता मागरेट विलियम का गुदगुदा बिस्तर सुल्लो के लिए किसी स्वर्ग से कम नही

एक रहस्य को सुल्लो आज तक नही समझ सकी और न उसने किसी से उसकी चर्चा की हर शनिवार को मागरेट विलियम शाम को सुल्लो को जाने नही देती हैं उस शाम किचन मे बहुत अच्छा खाना बनता है मीट और अडे की कई तरह की सब्जियां, बिरयानी, और भी बहुत कुछ चीजें कुछ सुल्लो बनाती और कुछ स्वय मागरेट विलियम बनाती वह ऐसा अच्छा मसाला भूनती हैं कि सुल्लो कई बार मुह मे आया पानी गले के अदर करती है साढे आठ के करीब जब किचन मे पूरी तैयारी हो जाती हैं, तब सुल्लो को 'डाइनिंग टेबल' लगाने का आदेश देकर मागरेट विलियम बाथरूम मे घुस जाती हैं आधा घटे बाद जब बाथरूम खुलता है, तब एक नये किस्म की खुशबू की भभक चारो ओर फैलने लगती है फिर मागरेट विलियम बहुत भारी सी साडी पहनकर मेकअप करने बैठ जाती हैं रोज से थोडा गहरा मेकअप करके, साडी से मैच करता सेट पहनती हैं सुल्लो मत्र मुग्ध-सी मालकिन का रूप निहारती रह जाती है

उसी रात साढे नौ और दस के बीच दो कारें आती हैं कुछ महिलाएं और कुछ पुरुष आते हैं खाने-पीने का क्रम लगभग एक दो बजे रात तक चलता है दिनभर की थकी सुल्लो बारह बजे तक खा पीकर मालकिन का आदेश पाते ही शैम्पी कुत्ते को लेकर स्टोरवाले कमरे मे सोने चली जाती है सुबह नीद खुलते ही सुल्लो मालकिन को 'बैड टी' देने जब उनके कमरे मे जाती है, तब मागरेट विलियम कमरे मे बहुत उदास चुपचाप बैठी होती

हैं थका चेहरा ऐसा लगता है कि सिर्फ एक ही रात से नहीं, कई रातें उन्होंने ऐसे ही किसी चिंता में डूबकर बितायी हो

सुल्लो पिछले छह महीना से मार्गरेट विलियम को हर शनिवार को बहुत सुंदर और इतवार की सुबह घोर चिंताओं में डूबा पाती है उसकी हिम्मत भी नहीं होती है कि मालकिन से कुछ पूछ सके सिर्फ इतना ही पूछ पाती है मेम साहब कोई गोली ला दूं ' और मार्गरेट विलियम सिर्फ इतना ही कह पाती हैं 'नहीं, कोई जरूरत नहीं' सुल्लो चुपचाप कमरे में बिखरे सिगरेट के जले टुकड़े समेटती है कांच के खाली गिलास उठाकर कमरे से बाहर चली जाती है सुल्लो ने इस सबकी चर्चा आज तक किसी से नहीं की है मिसेज सेठ ने कई बार खोद-खोदकर उससे पूछा भी अपनी पुरानी साड़ियां भी दी लेकिन सच तो यह है कि सुल्लो इतना ही जानती है कि मेम साहब यहां बिलकुल अकेली हैं सुल्लो स्वयं भी शनिवार की शाम और इतवार की सुबह का रहस्य नहीं समझ सकी है अपने आदमी तक को उसने इस बारे में कुछ नहीं बताया है

उस दिन दोपहर को सुल्लो गेट में ताला मारकर गुप्ता स्टोर गयी थी सुल्लो को देखते ही धूप सेकती महिला मंडली ने घेर लिया मिसेज चोपड़ा बोली, "सुल्लो, तेरी सुंदरता तो दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है"

सुल्लो इस समय अपना महत्त्व आंका जाना अच्छी तरह समझ रही थी श्रीमती सक्सेना की बगल में बैठती हुई बोली, "बीबी जी, तुम तो कैसी गुब्बारे-जैसी फूलती जा रही हो, योगासन किया करो" सारी महिला मंडली 'ही ही' कर हंस दी मिसेज सक्सेना ने खिसियाते हुए कहा, "बस बस योगासन तू कर और तेरी मेम साहब करें मुझे थो पीस नहीं बनना" मिसेज सेठ ने मुद्दे पर पहुंचते हुए कहा, "अच्छा सुल्लो ये बता, तेरी मेम साहब ने शादी ब्याह ' सुल्लो ने बात काटते हुए कहा, ' बस अकसर यही कहती हैं, मेरे मां-बाप नहीं हैं"

मिसेज सेठ बोली, "कभी किसी से मिलती-जुलती नहीं ? कोई बाहर से भी नहीं आता ?"

सुल्लो ने चिढ़ते हुए कहा, "देखो बीबीजी बुरा मत मानना तुम लोग

भी तो कभी उनका दुख-सुख पूछने नही जाती हो बच्चो तक को उनके पास नही भेजती हो ऐसा कौन सा मैल है उनम "

"मैल ?" मिसेज चोपडा तैश मे आ गयी थी "जब से मुहल्ले म आयी हैं, जवान लडकियां उनका रग-ढग निहारने मे लगी रहती हैं, जवान लडके कोठी के आस पास मडराते हैं और तो और चार-चार बच्चो के बाप "

'आप कहना क्या चाहती हैं मिसेज चोपडा, मेरे कपूर साहब ने तो कभी परायी स्त्री को आंख उठाकर नही देखा" मिसेज कपूर ने सफाई दी मिसेज चोपडा ने कहा, "बहनजी, मैं तो जनरल बात कर रही थी मेरे चोपडा साहब तो जब से क्लास वन हुए हैं, उन्हें घर मे भी ऑफिस के काम से फुसत नही"

मिसेज सेठ ने सबको चुप कराते हुए कहा, "हा, तो सुल्लो ! तू ये बता कि हम तेरी मेम साहब से मिलना चाहें तो क्या वो मिलेंगी" सुल्लो खुश होती हुई बोली, "क्यो नही ? मैं आज ही कहूगी," और उठ खडी हुई मिसेज कपूर ने कहा, "वैसे आइडिया तो बुरा नही है, उनसे मिला तो जा सकता है लेकिन " मिसेज चोपडा ने समस्या का समाधान किया, 'औरतें ही मिलें तो अच्छा है"

उस दिन फिर शनिवार था हमेशा की तरह सुल्लो और मागरेट विलियम शाम से ही किचन मे लगी थी नहाने के बाद जब मागरेट बाथरूम से निकलीं, तो खुशबू की भभक चारों ओर फल गयी सुल्लो को आश्चय तो इस बात का होता कि भरी सरदी मे भी शनिवार की शाम मेमसाहब नहाती जरूर हैं साढे नौ, पौने-दस के करीब दो गाडिया आयी जिसमें कई महिलाए तथा पुरुष थे खाना-पीना चलता रहा आज मेम साहब के आदेश पर भी सुल्लो सोना नहीं चाहती थी लेकिन मेम साहब के कहने पर उसे सम्पी को लेकर जाना ही पडा सुल्लो को आज नीद नही आ रही थी वह बडे हाल के दरवाजे के पीछे खडी हो गयी उसने देखा सभी लोग बहुत खुश हैं कहकहो और शोर के बीच मेम साहब उठती हैं और रेडियोग्राम के ऊपर रखे रिकार्ड बजने के लिए लगा देती हैं डास के लिए उनके परों मे थिरकन होती है वह चाहती हैं लोग उनके

साथ डांस करें 'यस यस ' कहती हुई, वह हाथ बढ़ाती है, लेकिन सभी मेहमान बुत बने बैठे रहते हैं मार्गरेट विलियम के चेहरे की खुशी अचानक उड़ जाती है वह उदास होकर चुपचाप कुरसी में धसी जाती है

रिकार्ड बज रहा है वह रिकार्ड हर शनिवार की पार्टी में बजता है सुल्लो उसकी धुन से परिचित है लेकिन रिकार्ड बजने पर क्या होता है यह वह नही जानती थी आज जो मेहमान आये थे, उनमे एक नया चेहरा भी था सुडौल और खूबसूरत उम्र यही कोई चालीस के आस-पास एक बहुत परिचित चेहरा अकल जानी का था वह अधेड़ उम्र के व्यक्ति जरूर थे लेकिन उनका व्यवहार मागरेट विलियम के साथ बिलकुल दोस्त-जसा था सुल्लो ने सुना—अकल जानी ने नये चेहरे से कहा, "डेविड, बस यहीं से इस कहानी की ट्रेजडी शुरू हो जाती है होता यह था कि विलियम मद्रास से दूर एक बड़ी फैक्ट्री मे काम करता था शहर से दूर फक्ट्री के वातावरण मे रहना न विलियम को पसन्द था न मागरेट को लेकिन फक्ट्री का उच्चाधिकारी होने के कारण रोज मद्रास आना भी सभव न था शनिवार की रात वह जरूर आता था उसकी ट्रेन मद्रास सेंट्रल पर कोई सवा नौ, साढ़े-नौ के करीब पहुचती, वह टैक्सी लेकर सीधे घर आता, जहा उसकी प्रिय मागरेट, सभी दोस्तो के साथ पार्टी के लिए प्रतीक्षा किया करती मागरेट को विलियम के आने का इतना पक्का अदाज था, कि यह रिकार्ड शुरू होते ही विलियम जरूर आ जाता फिर डास होता खाना-पीना होता और देर रात को सब लोग अपने-अपने घर चले जाते "

अकल जानी अचानक एक ठडी सांस लेकर बोले, "लेकिन एक दिन विलियम की ट्रेन का एक्सीडेंट हो गया फिस प्लेट निकल जाने से इजन और बोगियां उलट गयी थी उनमे विलियम भी था उस रात मागरेट विलियम का इतजार करती रही सवेरे अखबार मे दुघटनाग्रस्त लोगो मे विलियम का नाम भी था लेकिन मागरेट पर उस खबर का कोई असर नही हुआ वह बोली नही ऐसा नही हो सकता, विलियम को किसी कारण फक्ट्री मे रुकना पड़ा होगा, एक्सीडेंट मे किसी और विलियम की मृत्यु हुई होगी ' मार्गरेट का यह विश्वास बहुत पक्का था अन्त मे मैंने यही निश्चय किया कि इसे दिल्ली ले चलू जगह बदलने से शायद इसे

असलियत का अहसास हो सके यहां मार्गरेट को एक अच्छी फैक्ट्री मे नौकरी लगवा दी है सब कुछ ठीक है, लेकिन हर शनिवार इसे विलियम का इतजार होता है"

अचानक ही अकल जानी उठे उन्होंने डेविड से कहा, "डेविड क्या तुम मार्गरेट के लिए विलियम नही बन सकते हो ? मैं जानता हू कि यह शादी " और रिकार्ड बजना अचानक ही बद हो गया मार्गरेट ने सुई उठाकर स्टड पर रख दी थी सारे माहौल मे सन्नाटे का करेंट लग गया था सब चुपचाप उठकर डाइनिंग टेबिल पर खाना खाते रहे अकल जानी के गले मे कौर फस जाता है और वह खासने लगते हैं मार्गरेट उठकर उन्हें पानी पिलाती है और फिर अकल की सजल आखो मे झाककर पूछती है, "अकल, विलियम अगले शनिवार जरूर आयेगा न ?"

अकल कुछ नहीं कहते हैं चुपचाप सिर झुका लेते हैं रात गहराने लगती है, धीरे धीरे सब उठकर चले जाते हैं सुल्लो देख रही है, मेमसाहब का चेहरा स्याह और उदास है देर तक वह सबको जाता देख रही है, जैसे सोच रही हों—क्या हुआ अगर पार्टी खत्म हो गयी ? विलियम फिर भी तो आ सकता है ऐसा पहले भी तो एकाध बार हुआ है आते ही कहेगा, "कोई बात नही डार्लिंग, अब हम और तुम ?" मार्गरेट दूर-दूर तक फले गहरे अधेरे मे देख रही हैं जाती हुई कारो की रोशनी अपने पीछे अधेरा छोडती जाती है मार्गरेट विलियम बहुत थकी बेजान-सी अपने कमरे मे आ जाती है सुल्लो चाहती है कि वह अकेली उदास मेम साहब के पास चली जाए पर उसे डर लगता है वह स्टोर मे चली आती है आज सुल्लो मेमसाहब को गोली के लिए भी नही पूछ पाती है चुपचाप जले हुए सिगरेट के टुकडे उठाने लगती है काच का खाली गिलास उठा कर बाहर चली जाती है हर शनिवार के बाद अगली सुबह उसे ऐसा ही तो करना पडता है

० ०

जमाने के पख

घर मे खासी चहल पहल थी मेहमानो की चिटिठया भी आनी शुरू हो गई थी शादी के दिन भी तो कुल चार ही बचे थे दीदी का एक पाव घर मे था तो एक बाजार मे महीनो से तैयारी हो रही है, कि कही ऐन मौके पर कुछ कमी न रह जाये, और भागा दौडी की नौबत न आने पाये लेकिन न खत्म होने वाला काम भानुमती का कुनबा होता जा रहा था और तो और रिचा के कपडो का ही बॉक्स नही लग पाया था किसी साडी का फॉल नही लग पाया था तो किसी ब्लाउज की फिटिंग ठीक नही थी और ब्लाउज फिर से दर्जी को देना पडा था दीदी भी क्या करती अकेली जान कहा-कहा भागे अम्माजी तो दीदी की इन तैयारियो से ऊब उठी थी "अरे हमने भी बेटियो का ब्याह रचाया था पर कोई आसमान नही सिर पर उठा लिया था महीनो मेहमान आकर टिके रहते थे पर क्या मजाल कि रसोई मे कभी माचिस की एक तिली भी कम हो पर अब तो जसे जमाने को ही पख लग गये महीनो से शादी की तैयारी हो रही है हजारो का सामान आ रहा है, और घर मे मातम सा छाया है कही कोई रौनक नही न ढोल, न मजीरा, न बाजा न बनी कुल चार रोज रह गये हैं शादी के मेहमानो की तो दूर अभी घर वाले ही नही आ पाये हैं मालकिन को खरीदारी से ही फुरसत नही "

अम्मा जी का ये टेप तभी बजता है जब दीदी घर मे नही होती हैं मेहमानो के आगमन से दीदी को बडी कोफ्त होती है दीदी नौकरी पेशे वाली ठहरी अपनी गृहस्थी और तीन बच्चो को सम्हालने के लिए उन्हें वक्त जुटाना पडता है अम्मा जी साल की दूसरी छमाही यही बिताती हैं कडाके की ठड, घर का तमाम काम, स्कूल की तमाम जिम्मेदारियों से तनाव ग्रस्त दीदी का मस्तिष्क, और उसमे अम्मा जी की चटकारा लेती जबान की

फरमाइशें "बहू आज बाजरे की कचौड़ी बनाओ तो आज मक्के की रोटी और सरसो का साग बनाओ" दीदी झुंझला उठती हैं अम्मा जी की ये क्यो नही समझ में आता है कि एक आदमी मशीन नही हो सकता फिर स्कूल मे भी सिर्फ पढाने भर की बात हो तब तो कुछ बात भी बनती है जब से दीदी प्रधानाध्यापिका हुई हैं तब से तो दम मारने की भी फुरसत नही मिलती है आज यहा मीटिंग, कल वहा मीटिंग और तो और आये दिन स्टॉफ का कोई न कोई मेम्बर छुट्टी चाहता है फिर शिक्षक कल्याण समिति के कुछ मेम्बर इसी स्कूल में हैं बड़े ही धाकड़ किस्म के हैं सिवाय नेतागिरी के उन्हें और कुछ करना ही नही आता श्यामली बाई स्कल की चपरासिन दीदी का बहुत ख्याल करती थी अक्सर उनके घर जाकर बहुत से घरेलू काम निबटा देती थी सो उसे भी इन नेताओ ने जब से भड़काया है तब से हाल ये है कि बिना सरकारी आडर लिए कोई पोस्ट ऑफिस से टिकट भी नही लाकर देती है दीदी ने कई बार कभी सीधे और कभी घुमा फिरा कर सचालक महोदय से कहा भी है कि इस विद्यालय से मजूमदार और पाण्डे का तबादला कर दें ये सिर्फ नेतागिरी ही करते हैं, बच्चो को पढाते लिखाते कुछ भी नहीं हैं, पर दीदी ये भी अच्छी तरह जानती हैं कि उनकी आवाज तो सिर्फ सचालक महोदय तक ही है मजूमदार और पाण्डे की आवाज और ऊचे तक पहुचती है इसी लिए दीदी ने रिचा के विवाह से छै महीने पहिले ही छुट्टी के लिए अर्जी दे दी थी कही ऐसा न हो कि ऐन मौके पर पाण्डे और मजूमदार कोई हगामा खड़ा कर दें और दीदी अपनी प्यारी सी बिटिया के ब्याह की तमा ो का अरमान सजोये ही रह जाये

दीदी को छुट्टी भी मिल गई थी पर होता क्या है अरे शादी ब्याह का काम कोई आसान थोड़े ही होता है अम्मा जी के प्रवचन के हिसाब से तो रिचा को दो साड़ी मे भी विदा किया जा सकता है पर जमाना कितना आगे बढ चुका है फिर कुछ गलत थोड़े ही है जिसे पहनना ओढना है उसी के मन पसन्द के कपड़े न हो तो किस काम के शादी कोई बार-बार तो होती नही छुट्टी मजूर होते ही दीदी ने अपना और रिचा का दिल्ली का टिकिट बुक करवा लिया लेटेस्ट डिजाइन और वाजिब कीमत दोनों

के ही लिए दिल्ली से उपयुक्त और कोई जगह नहीं हो सकती इसी बहाने अमित के परिवार से भी मिलना हो जायेगा वहा कैसी तैयारी हो रही है इसका भी थोडा बहुत जायजा मिल जायेगा दिल्ली के प्रोग्राम से रिचा भी बहुत खुश थी एक सुनहरा अवसर उसे फिर मिलेगा

दिल्ली का ट्रिप अच्छा रहा अमित के पसन्द की कई साडिया रिचा ने ली पर मौसम की तबदीली का असर भला दीदी की नाजुक बिटिया कहा झेल पाती, कहा भोपाल की गुलाबी ठड, और कहां दिल्ली की कपा देने वाली ठड सो भोपाल लौटते ही रिचा बिस्तर पर पड गई बडे डॉक्टर आये कई तरह की गोलिया, कैपसूल टॉनिक हर घटे फल का जूस सूप, तिमारदारी का काम और बढ गया दीदी के पास वैसे ही समय कम था सुरेश राय भी छुट्टी पर थे लाडली बिटिया का ब्याह था, बरातियो के आव भगत की तैयारी मे लगे थे बीमार बिटिया के पास घटे-आध घटे बैठने की भी फुरसत नही थी ले देके अम्मा जी पर तिमारदारी का काम डाला गया

अम्मा जी रिचा के पास बैठते ही अपना टेप बजाने लगती "अरे तुम तो बीमार हो गई जऊन आब हवा बदला और ठडी लगी हमारी बिटिया तो सादी की घर मे चर्चा का चली कि बीमार जैसे हो जाती रही और उधर शादी का हगामा शुरू हुआ और इधर इनके आंसुअन का बहना शुरू हुआ तो इ समझो जब तक बिदा के समय सारा घर न रोये आसू थमते नहीं थे पर अब उ बात कहा रही अब तो जैसे जमाने को पख लग गया है"

'रिचा दादी मा के इस टेप से ऊबती हुई बोली—"दादी मां, आप बहुत बोलती हैं सर मे दर्द होने लगा है"

कुछ खीझती सी अम्माजी बोली "अब जब बुखार चढा है तो सर में दर्द तो होयेगा ही उठो इ गोली खाइय लो, हम तो पहिले ही जान रहे थे, दिल्ली गई हैं जरूर हाली-बीमारी साथ लेकर लौटेगी, पर हमारी सुने तब तो ? अरे हमारे जमाने में लडकी का ब्याह तय हुआ नहीं कि कोई परछाई नहीं देख पाता था पर अब तो जसे "

"जमाने को पख लग गये हैं "रिचा ने दादी मां का वाक्य पूरा

करते हुए लिहाफ से मुंह ढक लिया अम्माजी भी भुनभुनाती हुई हठ गईं, "आग लगे इस पढ़ाई को न किसी की इज्जत न किसी का मान सम्मान्' अरे लाख ज़माना बदल जाये तो क्या सास ससुर और ससुराल का कायदा अदब तो सबको निभाना पड़ता है लेकिन जब मायके मे ही बाप भाई का कोई लिहाज नही है तो ससुराल तो चार दिन भी नही निभेगी एक हमारी बेटियां हैं इसी घर खानदान की हैं पर मजाल है कि उन्होंने कभी खानदान पर कोई आच आने दी हो "

अम्माजी ये तो अच्छी तरह जानती हैं कि जिस तरह जमाने के पंख लग गये और लोग चलने की जगह उड़ने लगे हैं, उस हिसाब से अम्माजी के लिए चलना क्या, रेंगना भी मुश्किल हो गया है मन मे अनुभवो की जाने कितनी आंधियां चलती रहती हैं किसके आगे अपनी भड़ास निकाले हर वक्त इसी तलाश में रहती हैं कि कोई अच्छा श्रोता मिल जाये दीदी को तो बिलकुल ही समय नही मिल पाता यो भी अम्मा जी को वो अपना सिर दर्द समझती हैं लेकिन जब से रिचा सयानी हुई है दीदी मन से यही चाहती है कि अम्मा उन्ही के पास बनी रहें सुरेश राय को अपने ऑफिस और दीदी को अपने स्कूल की जिम्मेदारियों से घर के लिए वक्त कम ही मिल पाता है ऊंचे ओहदे की नौकरी है आये दिन चार लोगों का आना-जाना बना ही रहता है फिर क्लब और मीटिंग का बखेड़ा भी कुछ कम नही दीदी को नौकर चाकर पर भी बहुत विश्वास नही, अम्मा जी बूढ़ी ही सही, घर की सुरक्षा मे किसी ताले से कम नहीं पर अम्मा जी की पहरेदारी से रिचा बहुत खीझती है, घर मे आने वाले हर जवान लड़के पर निगाह रखती हैं, चाहे वो मौसरे भाई हो या फुफेरा भाई कई बार वो दीदी से कह भी चुकी हैं कि उन्हें आलोक का आना अच्छा नही लगता है जब देखो तब रिचा के कमरे में घुसा रहता है उसकी निगाह बहुत अच्छी नहीं है फिर आग और घी का बहुत पास रहना अच्छा नहीं है पर, अम्मा जी के इन प्रवचनो को सुनने का वक्त ही किसी के पास नही हैं फिर जमाना बहुत आगे बढ़ चुका है

आलोक दीदी की सगी बड़ी बहन का बेटा है रिचा उसे राखी बांधती है आलोक की कोई बहन नहीं है अपने मां बाप का इकलौता बिगड़ा

नवाब है या तो आलोक दीदी और विशेषकर सुरेशराय को भी बहुत पसंद लगता है। लिखने मे साढ़े बाइस है, रिसर्च के हिसाब से एक-एक क्लास की पढ़ाई करता है रिचा से तीन साल बड़ा है, रिचा ने एम०एस-सी० पास कर लिया और आलोक अभी बी० ए० मे है कई बार सुरेश राय ने ज्यादा ज़रूरत से आलोक के आने और रिचा से इतना घुल-मिल कर बात करने पर आपत्ति भी उठाई लेकिन सुरेश राय की इस आपत्ति का दीदी ने कड़ा विरोध किया और सुरेश राय को ये अच्छी तरह बता दिया है कि आज जिस प्रतिष्ठित पद पर सुरेशराय हैं उसका श्रेय आलोक के पिता यानि उनके जीजाजी को है आलोक के पिता प्रदेश की जानी-मानी हस्ती है — उन्हें कौन नहीं जानता लोग महीनो के परिश्रम के बाद भी उनसे मिल नहीं पाते हैं फिर दीदी भला कैसे उनके महत्व को ठुकरा सकती हैं हर मुसीबत की घड़ी मे उन्हें अपने जीजाजी का ही तो सहारा रहता है स्कूल में जब पाण्डे और मजूमदार ने हंगामा किया था और नौबत दीदी के खिलाफ तक आ पहुची थी तो जीजाजी ने ही उस मामले को रफा-दफा किया था इतने ढेर से अहसानो से दबी दीदी, भला आलोक के महत्व को कम नकार सकती थी आलोक का इस तरह घुलना मिलना अच्छा तो उनको कभी नही लगता रिचा सयानी है उसे ही समझा लेती हैं, कि वो आलोक से बहुत बातचीत न किया करे पर दीदी उस समय मजबूरी की बात से तिलमिला कर भी कुछ नही कह पाती हैं—जब आलोक धड़-धड़ाता मोटर साइकिल पर आता है और कहता है "मौसी, रिचा को लेकर पिक्चर जा रहा हूं उसका भी टिकट ले लिया [redacted] " दीदी कुछ कहें उससे पहले रिचा तैयार होने चल देती है

पर जब से रिचा का विवाह तय हुआ है, दीदी कुछ आश्वस्त सी हो गई हैं रिचा को देखते ही अमित के परिवार वालो ने हामी भर दी थी अमित भी प्रसन्न था और रिचा भी अमित की कल्पना से ही रिचा का आंचल फूलों से भर उठता और मन ही मन उन फूलों की महक से अभिभूत हो उठती अमित पढा लिखा है अच्छी फर्म में इंजिनियर है वेतन अच्छा है परिवार भी सम्भ्रान्त और आधुनिक है, रिचा की होने वाली सास बहुत मॉड हैं, उसकी मम्मी भी पढ़ी लिखी ज़रूर है पर बस स्कूल की

आदर्शवादी प्रधानाध्यापिका ही लगती है और दादी मा की चोकसी मे तो उसे घुटन सी होने लगती है दादी मा अगर आज के जमाने के संग उड पाती तो पहले तो वो जमाने के पख ही कतर डालती अब आलोक को ही लो, मस्त है मजेदार बातें करता है उसका व्यवहार एक दोस्त जैसा है रिचा को तो आज तक नही लगा कि आलोक म कोई खोट है यही बात उसने मम्मी को भी समझाई है फिर रिचा कोई सोलह साल की बच्ची तो नही है जो अपना भला-बुरा खुद न सोच सके

पर उस दिन हगामा मच गया जब रात बारह बजे के बाद भी रिचा घर नही लौटी आलोक उसे लेकर मोटर-साइकिल पर कही ले गया था एक दो और तीसरा दिन भी बीत गया आज ही रिचा की बरात आने वाली थी दीदी को तो ऐसा सदमा लगा कि बिस्तर से उठने की भी उनकी हिम्मत नही बची सुरेशराय बिलकुल गुमसुम हो गये थे मेहमानो से घर भरा था हर कोई अपनी तरह टीका टिप्पणी करने के लिए स्वतत्र था एक अकेली अम्माजी थी जो हर चोट को सहने के लिए अलग-अलग ढालो का प्रयोग कर रही थी उन्होने ही अपने दामाद से कह कर दिल्ली टेलीग्राम भिजवाया था कि बरात न आये

मेहमानो और सम्बन्धियो से भरे घर मे विचित्र सा मातम छाया था कुछ मेहमान तो अपना बोरिया विस्तर समेट कर चलते बने थे बस कुछ बहुत निकट के सम्बधी ही रह गये थे, जो ये निर्णय नही कर पा रहे थे, कि दीदी और सुरेशराय को इस हालत मे छोडकर जाना ठीक रहेगा भी या नही

शाम का धुधलका इधर उधर छितराने लगा था घर मे छाई मायूसी उस धुधलके को और गहरा रही थी अकेली अम्माजी थो जो कभी किसी को पानी पूछती, कभी किसी के लिए चाय बना लाती कमर झुकाए झुकाए उठाई-धरी का काम भी अम्मा जी ही कर रही थी दीदी और सुरेशराय को तो जसे पाला मार गया था—अपने ही घर मे बेगाने बने बैठे थे वैसे भी वातावरण इतना ट्रैजिक हो गया था, इसे हर कोई स्वीकार करते हुए भी उसमे कॉमेडी ढूढ रहा था

अम्मा जी महरिन को कोसती आगन से बतन समेट रही थी तभी

लगा जैसे कोई दरवाजे से टिका खड़ा है—अम्माजी दरवाजे की ओर बढ़ी शायद महरी आ गई लेकिन आज पिछले दरवाजे से कसे आई है ? सहसा अम्माजी एकदम चीख उठी, "अरे, रिचा बिटिया, तुम कहा चली गई थी हाय हाय तुम्हें ये क्या हो गया" रिचा अम्मा जी से लिपट कर फूट-फूटकर रोए जा रही थी गोरा सफेद चेहरा स्याह पड गया था अम्मा जी चीख-चीख कर सारे घर को पुकार रही थी रिचा बदहवास सी रोए जा रही थी—अम्मा जी जब तक रिचा को सम्हाले—कटे पेड सी वो आगन मे बेहोश होकर गिर गई सारे मेहमान इकट्ठे हो गए कोई उसके मुह पर पानी के छीटे मार रहा था—कोई उसे उठाकर अन्दर ले जाने की सलाह दे रहा था—तो कोई डाक्टर बुलाने की बात कर रहा था—दीदी ने देखा तो घृणा से मुह फेर लिया सुरेशराय गुस्से से थर थर काप रहे थे रिचा ने कराह के साथ आखें खोली—लडखडाती सी उठी और सुरेशराय के पैरो पर गिर कर फूट-फूटकर रोने लगी—"पापा, मुझे माफ कर दो—मेरी जिंदगी मिट्टी मे मिल गई—अब मैं शादी कभी नही कर सकूगी '

तभी प्रवेश के साथ एक भर्राई हुई आवाज आगन मे गूज उठी "कौन कहता है कि तुम्हारी शादी नही होगी—सुरेशराय घबराने की कोई बात नही, रिचा मेरे घर की बहू बनेगी—" आलोक सिर नीचा किए हुए आलोक ने कहा— हा मैं रिचा से

' खामोश हो जा कमीने तू मुझसे ब्याह करेगा नीच हट जा मेरी आखो के सामने से तुझे शर्म नही आती—मुझे अपनी पत्नी बनाएगा और पाण्डे और मजूमदार की क्या मैं रखैल बनूगी कमीने पापी तुझे तो नरक मे भी जगह नही मिलेगी चला जा नहीं तो मैं तुझे मार डालूगी "

बिजली कडकी और घनघोर काले बादलो मे समा गई सब स्तब्ध थे दीदी ताश के पत्ते के महल की तरह ढह गई थी शाम पूरी तरह रात मे बदल गई थी अम्मा जी रिचा को सम्हाल कहे जा रही थी ' मैं पहले ही कहती थी कि आग और घी का एक पास रहना ठीक नही पर जमाने को कौन रोके उसने तो पख लग गए है "

○ ○

गलत इकाइया

"ये मेरे बॉस हैं," मिश्रा ने उनसे मेरा परिचय कराया लम्बा कद, ढलती उम्र मे भी स्वस्थ्य शरीर, नाक नक्श बहुत सही नही तो गलत भी नहीं बॉस अपने पूरे बडप्पन के साथ मुस्कराए मैंने हाथ जोड दिये मैं गणित का अध्यापक हू, शायद इस वजह से हर चीज को जोडने घटाने की मेरी आदत सी होती जा रही है सक्सेना के बॉस को भी मैं जोडन-घटाने लगा बाम का जोड इस तरह निकल रहा था उनकी दौडती हुई मोटर, शराब की बोतलें सदा नवयौवना बनी रहने वाली उनकी पत्नी, उनके इदगिर्द चमचो का हुजुम सबको जोडने पर मुझे एक अदद बॉस साफ नजर आया वे उस पार्टी के केन्द्र बिन्दु थे, मुझसे हाथ मिलाकर काफी आगे निकल चुके थे काफी व्यस्त हैं मुझ जैसे लोगो से बतियाने का उनके पास समय भी न्हा होगा अपनी महत्वहीनता से मैं सुलग उठा मैंने मिश्रा स पूछा "क्यो बे तू इनका चमचा है क्या ?"

मिश्रा कुछ देर तक निरर्थक हसता रहा, शायद मेरे मजाक को हल्के म ले रहा हो फिर गभीर होता हुआ बोला "यार तू नही जानता, बडी रायल फैमली को बिलाग करते हैं मिसेज तो इनकी बडी स्वीट लेडी हैं बडी इन्टीलेक्चुअल भी हैं और ' मैंने मिश्रा को काटते हुए कहा "अरे बस भी कर यार तेरे पास पूरे परिवार का बहीखाता है क्या," मिश्रा कुछ चिढ कर मेरे पास से उठ दिया था यो भी वो बडी देर से मुझसे ऊब रहा था नीता उस बॉस की बगल मे बैठी थी मिश्रा सबकी आवभगत मे लग गया बॉस को प्रसन्न करने का इससे उपयुक्त शायद ही कोई अवसर मिले वो ये नही चाह रहा था कि नीता उसके बॉस के पास से एक मिनट के लिए भी उठे

पार्टी अच्छी चल रही थी मिश्रा बार-बार मेरे पास आता और चला

जाता शायद वो कुछ कहना चाह रहा हो काफी लोग जा चुके थे बाम और मुझे लेकर इक्का दुक्का लोग और थे मिश्रा फिर मेरे पास आया, उससे पहले मेरा गणित मेरे मस्तिष्क मे छाने लगा अपनी महत्वहीनता और मिश्रा द्वारा टाले जाने का जोड यही निकल रहा था कि मैं उठ कर चला जाऊ इस बार जब मिश्रा आया तो मैं उठ खडा हुआ था उसने औपचारिकता का सही शब्द इस्तेमाल किया "अरे, उठ दिये कभी फुरसत मे आना, तुमसे बहुत जरूरी बातें करनी है" मिश्रा मेरे कधे पर हाथ रखते हुए बोला, "चलो तुम्हे स्कूटर से छोड आता हू कहा रात मे अकेले भटकोगे" मैंने कमरे मे निगाह फेरी, नीता और बॉस एक दूसरे से बतियाने मे काफी मशगूल थे नीता के चेहरे का रग बार बार सुर्खियो म बदल रहा था मैं कुछ सशकित हो उठा मिश्रा के करीब आकर गभीरता स बोला 'लेकिन ये तेरा बास नीता अकेली ' मिश्रा ने मुझे झटकते हुये कहा "अरे यार तू हमारे सम्बन्धो को नही जानता, कभी खुल कर तुझ से बात करूगा चल चल जल्दी तुझे छोड आते हैं। मुझे कुछ घसीटता हुआ सा मिश्रा बाहर ले आया मैं रास्ते भर यही सोचता रहा ये सब क्या है, बिना किसी गणित की खाई के सम्बन्ध अपने आप जुड रहे थे

उस दिन इतवार था इन्दू और बच्चो के बिना पूरा घर साय-साय कर रहा था इन्दु इस बीच काफी बीमार रहने लगी थी घर गृहस्थी और बच्चो के सग उसे आराम नाम मात्र को नही मिल पा रहा था यो उसके पिता के भी दो-तीन पत्र आ चुके थे अत उसे मायके भेजना अनिवार्य सा हो गया था लेकिन अब इन्दु और बच्चो के बिना मेरा वक्त जम कर रह गया था कटने मे ही नही आ रहा था उसपर इतवार को काटना और भी अधिक मुश्किल हो रहा था अचानक ख्याल आया कि मिश्रा ने मुझे फुरसत मे बुलाया था इतवार का दिन ही उसके लिये भी फुरसत भरा होगा चार रोटियो का जुगाड भी उसीके यहा बैठ जायेगा सीढ़िया चढ़ते चढ़ते मैं मिश्रा और नीता के प्रति बहुत आत्मीय हो उठा था दोनों ही मुझे बहुत सम्मान देते हैं वैसे भी उनकी जिन्दगी को जोडने म मेरा रोल खासा है कॉलबेल बजाने की जरूरत नहीं पडी दरवाजा आधा खुला हुआ था लेकिन पर्दा हटाते ही मैंने झटके से छोड दिया नीता सोफे पर बहुत अस्त-व्यस्त सी

लेटी थी मुझे कॉलबेल वाली औपचारिकता [illegible] चाहिये थी नीता को सुबह-सुबह इस तरह अस्त-व्यस्त सा देख कर मेरे मस्तिष्क मे तमाम प्रश्न उभरने को हो रहे थे कि मैंने कॉलबेल की स्विच दबा दी कुछ एक मिनिट बाद नीता ने पर्दा हटाया

"अरे आप ? आइये आइये "

नीता इस समय काफी सजी सवरी दीख रही थी मैंने पूछा—"कही जाने की तैय्यारी म हो ?"

नीता कुछ अलसाई सी बोली "नही तो ?"

"फिर ये साडी वाडी, मिश्रा कहा है ?" मैंने बात को मोड़ दिया

"क्यो, क्या बिना मिश्रा के आप इस घर मे नही बैठ सकेंगे ? मुझसे डर लगता है ?"

सोफे पर धम्म से बैठती नीता देर तक अपनी ही कही बात पर हंसती रही

मैं अपने आप का कमजोर होता हुआ महसूस कर रहा था ऊपरी तौर पर नीता की हसी मे हसी मिलाता हुआ बोला "नही भई मेरे लिये मिश्रा और तुम कोई अलग-अलग तो नही

' क्या लेंगे, चाय या कॉफी ?"

"कुछ भी चलेगा, पर मिश्रा को तो आ लेने दो "

नीता ने मुझे छेड़ते हुए कहा, "मिश्रा मिश्रा क्या हो गया है उमेश भाई वे तो अपने बॉस के साथ गये हैं पता नही कब तक लौटेंगे इनके बॉस से तो आप मिल ही चुके हैं ही इज सच ए नाइस परसन "

बॉस की चर्चा करते हुए नीता कुछ अधिक उत्सुक और प्रसन्न हो उठी थी

मुझे खत्म हुई पार्टी, कमरे मे बिखरी हल्की नीली रोशनी, बॉस की पी जाने वाली निगाहे, और उन निगाहो से टकराती नीता, और नीता के चेहरे की सुर्खिया, याद हो आई मेरा गणित यहा भी जोड़ने घटाने की प्रक्रिया मे लग जाना चाह रहा था लेकिन उन सारी इकाइयो मे मिश्रावाली इकाई कही भी फिट नही हो पा रही थी मैं इकाइयो को सिलसिलेवार लगा देना चाह रहा था कि हाथ मे चाय की ट्रे लिये नीता आ पहुची नीता

चाय बनाती हुई इन्दू और बच्चों के बारे मे भी पूछती जा रही थी मैं चाय की सिप लेता हुआ अन्दरूनी तौर पर अपने गणित को पूरा कर लेना चाह रहा था तभी मिश्रा की आवाज सीढियो से होती हुई कमरे मे गूज उठी

"नीताऽऽ माई स्वीट डार्लिंग " लेकिन मिश्रा कमरे मे मुझे पाकर एकदम सहम गया इस समय अगर मैं यहा न होता तो नीता उसकी बाहों मे होती मैं मन ही मन सशंकित होने लगा कि निश्चय ही मुझे कमरे मे पाकर मिश्रा का जो रोमेंटिक मूड काफूर हुआ है उसका प्रतिशोध मुझे सहना पड़ेगा लेकिन हुआ उल्टा मिश्रा मुझसे बेहद प्रसन्नता से मिला बड़ी देर तक वो मेरे अहसानो से बोझिल होता रहा कि कैसे मेरी ही मदद से वे और नीता विवाह के सूत्र मे बध सके नीता जैसी जीवन सगिनी को पाकर वो कितना कृतार्थ हुआ है और ये कि एक मैं ही हू जो उन्हें वो सब कुछ देता हू जिसे सच्ची आत्मीयता का नाम दिया जा सकता है मेरा गणित इसे काफी पहले से ही साबित कर चुका था कि प्रसन्नचित्त होने पर कोई भी, बहुत जल्दी ही महान उच्च विचारो का लबादा ओढ लेता है नीता रसोई में पहुच चुकी थी और ये तय था कि मेरा इतवार अच्छा ही बीतेगा मिश्रा ने बताया कि शीघ्र ही उसका प्रमोशन होने वाला है उसके बॉस नीता और उससे बहुत प्रसन्न हैं मैं बहुत पहले ही ये स्पष्ट कर चुका हू कि गणित का अध्यापक होने के नाते गलत नम्बर काटने की मेरी आदत है यहा बॉस का नीता से प्रसन्न होना ? इसमे गलत इकाइयों का जोड़ हो रहा था पर मैं चुप हो गया सवाल इतवार बिताने का अधिक महत्वपूर्ण था मिश्रा की प्रसन्नता को बेस्वादा ही सही मैं भी पीने लगा

इन्दू आ गई थी और मैं अपने घर गृहस्थी के गणित को सही योग देने में जुट गया था लेकिन कैसी विडम्बना थी कि गणित का कुशल अध्यापक होकर भी मैं गृहस्थी का सही गणित कर पाने मे मैं हमेशा अपने को असफल पाता मेरी इस कमजोरी को इन्दू बहुत अच्छी तरह जानती थी अक्सर ही आर्थिक अभावों से आ लाई हुई इकाइयों को मैं साफ करता रहता और मुझे इस तरह जुटा हुआ देखकर इन्दू बराबर ही मेरा साथ

देती तब मुझे पूरा विश्वास होता कि कभी तो इस गृहस्थी का योग सही निकलेगा

मौसम बदलने के कारण देवा और अनुमा सर्दी खांसी से बहुत परेशान थे बच्चों की पीड़ा से इन्दू परेशान थी मैंने पूछा "डॉक्टर बुला लू ? गृहस्थी की दांव पेच मे इन्दू काफी अनुभवी हो गई थी बोली—"एलोपैथी से होम्योपैथी दवा अधिक फायदेमन्द रहेगी कुछ फल ला दोगे तो ज्यादा अच्छा रहेगा " मैं इन्दू से सहमत होता हुआ दवा लेने सिविल लाइन्स की ओर चल पड़ा शाम का अंधेरा टुकड़ों मे इधर उधर बिखर रहा था थोड़ी देर मे ही ये सारे टुकड़े सिमट कर काली पर्तों मे जम जायेंगे मैं अपने मे खोया साइकिल पर चला जा रहा था कि मेरी बगल से सरसराती हुई एक कार निकल गई मुझे लगा कार मे बैठी आकृतियां परिचित-सी हैं मैंने साइकिल की रफ्तार तेज कर ली कार प्लाजा के सामने रुकी मैं साइकिल से उतरकर धीमे चलने लगा मैं बहुत खुली हुई आंखों से देख रहा था कार से उतरने वाला व्यक्ति मिश्रा का बास था और उसकी बगल मे करीब करीब उससे चिपटी हुई नीता इस बार मेरे गणित को सही अंकों मे जुड़ने मे देर नही लगी लेकिन मिश्रा वाली इकाई कट कर जीरो हो गई थी

१

कई दिनों बाद मुझे मिश्रा मिला था मेरे गणित के अनुसार उसे जीरो होना चाहिये था लेकिन मुझे ये देखकर कम आश्चर्य नही हुआ कि उसमे काफी योग थे उसने मुझे बहुत स्पष्ट बताया कि उसका बास बहुत नेक है और उसके सम्बन्ध बॉस के साथ बहुत घनिष्ठ होते जा रहे हैं और ये भी कि उसका प्रमोशन निश्चित है कोहिली को इस बार चास नहीं मिलेगा मिश्रा बहुत आश्वस्त था फिर कई दिनों बाद जब मकान बदलने के चक्कर में मैं मिश्रा से मिला तो उसने मुझसे शहर की अच्छी लेडी डाक्टर के बारे मे पूछा था नीता का अबार्शन कराना चाहता था खर्च जो भी होगा बास देने को तैय्यार हैं यहां मेरा गणित फिर गलत इकाइयों पर अटक गया था

इस बीच मैंने घर बदल लिया था चार एक महीने हो गये थे मिश्रा का कोई समाचार नही मिला एक दिन डिपार्टमेन्टल स्टोर से मैं कुछ

सामान ले रहा था तभी नीता दीखी लेकिन इस बार नीता उस अधेड़ बॉस के साथ नहीं थी उसके साथ कोई नौजवान लड़का था नीता ने ही उससे मेरा परिचय कराया

"मिस्टर कोहिली मिश्रा के साथी हैं"

थोड़ी देर की औपचारिक बात के बाद मैंने ही पूछा "भई, तुमने मिश्रा के प्रमोशन की खबर नहीं दी" मिश्रा के प्रमोशन की बात पर नीता और कोहिली दोनों एक दूसरे को देखकर हंस दिये मुझे अटपटा-सा लगा नीता इसे भाप गई, और मुझे कनवीन्स करने की कोशिश म बोली, 'उमेश भाई, मैंने तो इनके प्रमोशन के लिये पूरी कोशिश की लेकिन ये खुद बहुत ढीले हैं अपनी साख अपने ही आप जब आदमी खो दे, तो उसका क्या इलाज ? एक्टिवनेस तो नाममात्र को नहीं है" नीता कहते-कहते रुक गई लेकिन अपनी ही बातों को उसने दूसरा मोड़ दिया मिश्रा के ही बारे में देर तक ऐलान करती रही कि मिश्रा की पर्सनॉलिटी में किन किन तत्वों का अभाव है, और मिश्रा किस कदर लिजलिजे हैं ये वही नीता थी जो विवाह से पहले मिश्रा के लिये जान देने को तैयार रहती थी यों ये भी सही था कि मेरी गणित के अनुसार मिश्रा का योग जीरो बहुत पहले हो चुका था पर नीता का गुणाफल इतना होगा ये मैं नहीं निकाल पाया था मैं देर तक जीरो हुए मिश्रा के बारे में सोचता रहा उसके आगे कोई भी नम्बर नहीं लग पा रहा था

मेरा नया घर मिश्रा के घर से बहुत दूरी पर था इसीलिये लम्बे अरसे तक हमारा कोई सम्पर्क नहीं हो सका एक दिन मैं देवा को गणित की बेसिक बातें समझा रहा था कि गणित में जोड़, घटाना, गुणा भाग यही चार चीजें हैं जिन पर सारे सवाल टिके रहते हैं किसी एक की भी पूरी तरह जानकारी न होने पर इकाइयों का क्रम इधर उधर हो जाता है— लेकिन जो इनके प्रति सावधान रहता है, वो कभी गलती नहीं करता है यही गणित के बेसिक तत्व हैं इसी बीच दरवाजा खटका मैं उठा दरवाजा खोलने से पहले मैंने खिड़की में से झाँक कर देखा गहराती शाम के अंधेरे में एक आकृति दरवाजे की ओर पीठ करके खड़ी थी मैंने खिड़की से ही झाँक कर पूछा, 'कौन है ?'

बहुत धीमी और थकी हुई आवाज थी, "मिश्रा"

मैंने झपट कर दरवाजा खोल दिया मिश्रा सर झुकाये अन्दर आने को मुडा मैं स्तभित रह गया उसकी बढी हुई दाढी, रुखे बाल और कृश-शरीर मैं अपने को रोक नही सका—"ये तुम्हे क्या हो गया तुमने कभी ?"

मिश्रा अपने को टटोलते हुए बोला, कुछ भी तो नही और उसकी फीकी हसी मेरे और उसके बीच ढेरो प्रश्न चिह्नो को उगा गई थी

"ये तुमने अपनी क्या हालत बना डाली है और नीता कहा है ?" नीता का नाम सुनते ही मिश्रा फफक उठा

"उमेश भाई नीता मुझसे खो गई" इसी वाक्य को कई-कई बार कह कर मिश्रा बच्चो की तरह अपना अपराध स्वीकार कर रहा था मैंने उसे अपनी ओर खीचा और किंचित झकझोरते हुए पूछा "ये तुम क्या कह रहे हो ? साफ-साफ क्यो नही बताते'

मिश्रा गभीर होता हुआ बोला "बताने को अब रह भी नही गया है कुछ"

'लेकिन तुम्हारे प्रमोशन का क्या हुआ ?"

"वो तो कोहिली को मिल गया !

'लेकिन मैं ये जानना चाहता हू कि नीता कहा है?" इस बार मेरा अधिकार गरज उठा था

प्रत्युत्तर म मिश्रा भी गरजा, "नीता भी कोहिली को मिल चुकी है" और झटके से कोई चीज टूट जाये कुछ ऐसे ही टूटकर मिश्रा मेरे कंधे पर सिर टिकाकर फफक उठा, "उमेश भाई मेरा सब कुछ खो गया"

इस समय मैं अपनी आदत के अनुसार गणित नहा कर पा रहा था लेकिन मिश्रा को सहलाते हुए यही सोच रहा था कि गणित के बेसिक तत्व, मैं इसे भी तो समझा सकता था कम से कम जि[illegible] सवाल म गलत इकाइया तो नही जुडती

० ०

जकड़

दस मिनट का ब्रेक था, स्टॉफ रूम में खासी चहल पहल थी मिसेज प्रधान की आवाज सबसे अधिक गूंज रही थी क्योंकि वे कुछ थी और इसके लिये वे सदा हावी रहती अपने विचारों को नगीने की तरह जड़ देने की सही परख, किसी जौहरी से कम नहीं थी उनमें किसी को किसी बहाने और किसी को किसी बहाने तराशती किसी न किसी रूप में वे सब पर छाई रहती पूरे स्टाफ में उनका दबदबा था एक आध सहानुभूति के टुकड़े फेंक कर वो लोगों को अपनी ओर खींच लेती ऐसा नहीं था कि मिसेज प्रधान के लिए विरोधी स्वर उठे ही न हों, पर उन्हें मिसेज प्रधान के आगे जल्दी ही अपनी हार स्वीकार करनी पड़ती मिसेज प्रधान का दावा था कि 'साइकोएनालिसिज' में उन्हें कोई मात नहीं दे सकता उनकी बात हमेशा वजनदार होती इस दस मिनिट के ब्रेक में भी लोग उनकी वजनदार बातों से अभिभूत हो रहे थे—"भई, देखो हम तो यह मान कर चलते हैं, कि घड़ी की चलती हुई सूई को पकड़ा नहीं जा सकता है समय की चेतावनी दिला कर घड़ी आगे बढ़ लेती है, जो चेत गया वह पा गया और जो ?" प्रश्न चिह्न की तरह मुंह बिचकाते हुए मिसेज प्रधान रुचि की ओर इंगित हो उठी थी "का बरसा जब कृषि सुखानी" मिसेज प्रधान की बात समाप्त होते ही पूरे स्टॉफ में हंसी गूंज उठी मिसेज गुप्ता उनके काफी करीब थी उन्होंने फुसफुसा कर कुछ कहा इस समय भी वह मिसेज प्रधान की चम्मच हो रही थी अपनी आवाज में अतिरिक्त मिठास घोलते हुए बोली 'आज यह समय की बहुमूल्यता पर "

मिसेज प्रधान और उभर पड़ी, बात बहुत साधारण है शादी-ब्याह को ही लीजिये, इसकी भी एक उम्र होती है बुढ़ापे में शादी किस काम की "

सबने एक दूसरे की हा मे हा मिलाई हा मे हा मिलाने वाली ये सभी अध्यापिकायें स्टॉफ रूम मे पडी बडी टेबुल के इदगिद बैठती है और एक दूसरे के मामले मे अच्छी तरह से दखल अन्दाजी करती हैं

इसी स्टॉफ मे रुचि की टेबल एक कोने म है सबसे अलग उस टेबल पर काम करने वाली अन्य दो अध्यापिकाए विज्ञान की हैं जो अधिकतर प्रयोगशाला मे ही रहती हैं फिर रुचि बहुत कम बोलती है इसलिये सबसे उसकी इन्टीमेसी भी नही हो पाती है मिसेज प्रधान की वज़नदार चोट किस पर थी इसे समझने मे रुचि को देर नही लगी जाच रही कापियो को उसने एक ओर सरका दिया सामने रखे कांच के गिलास को उठा लिया गिलास मे आधा पानी था साफ उजला पानी एक ही स्थिति मे बन्द बडी देर तक वा उजले पानी को देखती रही उसने धीरे से अपने पेन की निब गिलास के पानी मे छूला दी उजले साफ पानी मे नीले रग की धारिया बनने लगी धारिया फैलने लगी और साफ उजला पानी नीला होन लगा क्षण बीता भी नही और एक स्थिति दूसरी स्थिति मे बदलने लगी गिलास के उजले पानी मे नील विष लहरिया उसे अपनी स्थिति मे ढालने लगी थी स्थितियो के बदलते हुए क्रम मे रुचि के सामने एक चेहरा बहुत साफ होकर उभर आया, उसकी मा का, स्थितियो के हावी होने से वो भी कैसी टूटती जा रही है शायद एक दिन ऐसा हो जब महज़ स्थितिया ही होंगी, मा नही

जानने-समझने की उम्र से, रुचि ने मा के चेहरे पर कोई चटक रग नही पाया वही फीका चेहरा और बुझने-बुझने को हो आई एक जोडी आखें तीज त्योहार पर भी घर की रगी साडी, सिन्दूर भरी माग, ईगुरी बिन्दी और पैरो मे महावर इतने सब करके भी मा के अन्दर वाले सभी रग उसे बदरग कर गये थे सुबह से शाम तक गृहस्थी का बोझ ढोने वाली मा क्या कभी गहस्थी से मुक्त हो सकेगी ? रुचि जानती है मा कभी मुक्त नही हो सकेगी रोज उगती नई नई कटीली स्थितिया एक न एक दिन अवश्य ही उसे क्षत विक्षत कर देंगी

रुचि इन सारी स्थितियो से दूर रहना चाहती है काच के गिलास का पानी इतनी दूर हो कि उसके उजलेपन मे किसी भी स्थिति का स्पश न

हो सके पूरी तरह स्थितप्रज्ञ उसने गिलास एक ओर सरका दिया और कापियो का बडल अपनी ओर खीच लिया मासिक परीक्षा की कापिया थी अधिकाश छात्राओ ने उत्तर पूरे नही लिखे थे प्रश्न इतने आसान पूछे गये थे कि उत्तर पूरा लिखा जा सकता था उसे इस अधूरेपन से चिढ है लेकिन उसकी अपनी ही चिढ ने फिर उसे प्रश्नो के घेरे मे ला खडा किया पूरा और अधूरा ? मिसेज प्रधान की नाप मे रुचि अधूरी है, क्योकि वो विवाहित नही है लेकिन मा विवाहित है, चार बच्चो को भी जन्म दे सकी है वो क्यो अधूरी है ऐसा क्यो है क्या हर व्यक्ति का नापने के लिए पैमाने अलग-अलग हैं ?

मिसेज प्रधान ने रुचि का नाप लिया है और उनके पैमाने पर वो अधूरी है क्या रुचि स्वय अपने को नही नाप सकती है लेकिन उसने कुछ ढाप लिया है खुल कर सोचने और कहने का का ढग बवजनी तो नही होगा ये जान कर भी वो साफ तरीके से प्रकट नही हो पाती है मा उसके अन्दर के छिपाव को जानती है उन्होने तब उसे उधेडा भी है लेकिन उघड कर तो सब कुछ बहुत विस्फोटक हो गया है यही कारण है कि उसने अन्दरूनी तौर पर अपने को अच्छी तरह से ढाप लिया है विस्फोटक स्थितियो से उसे डर लगने लगा है इस महीने दो सप्ताह बीत गये वेतन उसे अब तक नही मिला है बाबूजी रोज पूछते हैं 'रुचि तेरा वेतन अब तक नही मिला प्रिंसिपल से कुछ कहती क्यो नही है" लेकिन वो कहे कैसे मिसेज प्रधान के फेंके हुए सहानुभूति के टुकडे उसके आगे आ गिरते हैं "भई मिस रुचि इस बार वेतन अब तक नही मिला, अरे भाई तुम्हे किस बात की फिकर तुम ठहरी छडी, तुम्हें क्या ?'

इतना सुन कर भी रुचि बोल्ड हो तो कैसे ? बस भी अपने को ढापते रहने का प्रवृत्ति उसकी बढती ही जा रही है उस दिन बाबूजी मा से कह रहे थे कि रुचि की शादी कर देंगे तो घर का खर्च कैसे चलेगा ? बच्चो की परवरिश क्या अकेली मेरी कमाई से होगी मा एक दम उबल पडी, तो क्या उसकी उमर हम लोगो का बोझा ढोने मे ही बीत जायेगी ?'

'हम कब कह रहे हैं, हमने पढा लिखा दिया अब अपना घर बार खोज ले 'बाबूजी तन कर बोले माँ बेबस सी चीखी, ये तुम कह रहे

हो तुमने उसे जन्म दिया है ऐसा ही था तो ... "

मा पूरा बोल भी नही पाई थी और बाबूजी ने गरजती आवाज के साथ भरपूर तमाचा उनकी गालो पर जड दिया, "कमीनी, बदजात, जिस थाली म खाती है उसी मे छेद करती है" बाबूजी आपा खो बैठे थे और जो हाथ मे आया उसी से मा को उन्होंने पीटा छोटे भाई बहन सहमे से एक कोने मे दुबक गये मा को बचाना चाहा था लेकिन मा ने मुझे झटक दिया था, वो बुरी तरह चीख रही थी, "मार डालो, खतम कर डालो मुझे, इन्हे भी मेरे साथ ही दफना दो "

ऐसी ही विस्फोटक स्थितियो से रुचि भयभीत होकर अपने को ढापती जाती है, कभी कभी उसका अपराधी मन सिसक उठता, इन विस्फोटक स्थितियो को भडकाने वाला कारण वही थी लेकिन उस दिन का विस्फोट बडा भयानक था घर मे भयानक सन्नाटा छा गया था अक्सर ऐसा सन्नाटा मौत के बाद होता है मां की पथराई आखें ऐसी लगती जसे उसके आगे से ढेरो लाश उठ गई हो बाबूजी इस बीच बराबर घर देर से आते रहे और मा अपने को अपने स ही ढकेल कर नशे म धुत्त बाबूजी को सम्हालती उल्टिया साफ करती मुह घुमाती रही छोटे भाई बहन कुछ दिन तक तो सहमे रहे लेकिन वे अपनी जरूरतों के प्रति अधिक जिम्मदार थे और हमेशा की तरह वे फिर मा को नोचने लगे

घटा बज चुका था पाचवा पीरियड रुचि का था उसने कापियो का बडल एक ओर सरका दिया अलमारी से पुस्तक और रजिस्टर निकाला पर्स को कधे से लटकाकर उठ खडी हुई गिलास का सफेद पानी बहुत पहले ही हल्का नीला हो चुका था नीली लहरिया बनना ब द हो गई थी रुचि का मन हुआ एक बार फिर पेन की निब उसमे छुआ दे और चल द लेकिन अपने इस बचकाने इरादे पर मन ही मन मुस्कराती वो क्लास लेने चल दी एक स्थिति का दूसरी स्थिति पर पर हावी हो जाना, मात्र एक दबाव नही है वरन् उसम एक बहुत बडा गुण है वे एक दूसरे से बहुत जल्दी ही समझौता कर लेती है रुचि भी चाहती है कि समझौते वाले इस गुण को वो भी अपना ले तो अन्दर कम से कम नीली विष लहरिया तो न महसूस हो

निशा रुचि की बचपन की सहेली रही है पढ़ाई लिखाई मे वो शुरू से साढ़े बाइस रही हर कक्षा मे रुचि का सहारा लेकर वो पास होती रही इन दिनों निशा ससुराल से मायके आई हुई है रुचि को वो कई बार बुलवा चुकी थी निशा से मिलना तो रुचि भी चाह रही थी पर वो टाल गई थी मा ने कई बार कहा भी कि जाकर निशा से मिल क्यो नहीं आती, कई बार बुलवा चुकी है ये वही निशा थी जिसके साथ घटो बिता कर भी उसका मन नही भरता था और भाग भाग कर उसके घर जाने के लिये उसे फटकार भी सुननी पडती थी लेकिन अब जैसे पिछला सब कुछ धुल पुछ गया हो हार कर निशा ही उससे मिलने आई थी निशा खासी मुटकी हो आई थी, उसकी गाद मे गोल मुह का गदबदा बच्चा था कपडे, लत्ते, गहने, और बेटे से तो गरिमामयी लग ही रही थी फिर बार-बार अपने 'उनके' सदर्भ से उसका व्यक्तित्व और भी दीप्त हो उठता रुचि उसके दीप्त हो रहे व्यक्तित्व से कही बहुत गहरे चोट खा रही थी इस चोट से बचने के लिये निशा से अधिक वो उसके गदबदे बच्चे मे अपनी व्यस्तता जाहिर करने लगी जाते जाते निशा मां को चेता गई, "चाची, रुचि की शादी अब कर क्यो नही देती, नौकरी, चाकरी तो शादी के बाद भी करती रहेगी " और मा अपनी बेबस हो आई आवाज मे सिर्फ इतना ही कह सकी, कोई अच्छा लडका तू ही बता न ! "

मा के इस बेबस हो जाने पर रुचि अक्सर खीझ उठती है, फिर उसे दया भी आती है अन्दर वाले कुछ को ज़ोर से दाब कर वो सहज हो जाती है निशा अपने मे कितनी लीन है ऐसी ही लीन कभी मा भी हुई होगी एक सहज और विस्मत न किया जाने वाला सुख दाबे हुए कुछ को चीर कर कुछ प्रश्नचिह्न उभरने लगते हैं 'क्या तू नही चाहती कि तेरा भी कुछ अपना हो जिसमे पूरी तरह से लीन हुआ जा सके एक सहज न विस्मत किये जाने वाला सुख ' उसका अपना सुख, दाबे हुये अधकार को चीर कर मुखर हुआ सुख लेकिन स्थितियो की भारी जजीरो ने उसके पैरो को जकड रखा है—उसे वो तोड नही सकती है तोडने पर परिवार को प्रतिमाह साढे आठ सौ रुपये का घाटा हो जायेगा छोटे भाई-बहनो को सम्हालने की जिम्मेदारी क्या अकेले बाबूजी सम्हाल सकेंगे और मा क्या

सब सहते सहते कुचल नही जायेगी

हाथ में पकडी मेगजीन को रुचि ने एक ओर सरका दिया घटा बज चुका है, उसे क्लास लेनी है कक्षा मे शोर हो रहा होगा दीवार पर लगी घडी की सुइयाँ बिना किसी का इन्तजार किये घूमती जा रही थी उनकी रफ्तार को कोई रोक नही पाता है रुचि यह तय करती उठ खडी हुई कि मिसज प्रधान की बात बेवजनी नही होती

० ०

काच के उस पार

सीढिया उतरते उतरते मैं यही सोच रही थी कि जब पिछले कई दिनो से किसी को पत्र लिखा ही नही तो फिर जवाब आयेगा भी कहा से। फिर भी आदतन जब मैंने लेटरबॉक्स मे झाककर देखा तब उसमे कई चिटिठया पडी देखकर सुखद आश्चय हुआ दो निमन्त्रण-पत्र थे —दूर की रिश्तेदारी मे शादी थी पोस्टकाड मे भाभी न शिकायत की थी कि बहुत दिनो से मैंने पत्र क्यो नही भेजा और यह कि दिल्ली जाकर मैं बहुत आलसी हो गयी हू जबकि महानगरो मे तो लोग काफी चुस्त रहन के आदी हो जाते हैं चौथा पत्र लिफाफा था—कुछ भारी-सा लिखावट भी बडी अनचीन्ही-सी थी किसका पत्र हो सकता है, यही सोचते सोचते मैं ड्राइग रूम म आकर बैठ गयी पत्र मेरे ही नाम था, इसलिए खोलकर देखा स्कूल की लाइनदार कापी के कई पन्नो म लिखा हुआ पत्र था—

"आप किस नाम से सबोधित करू, कुछ समझ मे नही आ रहा है आटी नही यह शब्द मुझे अच्छा नही लगता क्योकि अब इसम फशन की गध ज्यादा आने लगी है अपनापन कही दूर जाकर सिमट गया है हा, दीदी कहना ज्यादा ठीक होगा पर पता नही आपको कसा लगे। बात यही है कि जब हम मिले थे तब आप बहुत बडी थी और मैं सिफ नौ साल की थी अब तो उस बात को भी सात साल हो गये हो सकता है आप मुझे भूल भी गयी हो, पर मैं आपको आज तक नही भूली हू, तभी तो यह पत्र लिख रही हू

पापा की मत्यु के कितने दिनो बाद मुझे ऐसा लगा था जसे आपसे मिलकर मेरा अपनेपन का सबध कही फिर से जुड गया है आपने मुझ देखा था, उस समय न जाने क्यो मैं यह महसूस कर रही थी कि मेरे अदर जमा हुआ पत्थर पिघल रहा है वैसे होने को मेरे और आपके बीच

बडी औपचारिक बातें ही हुई थी, लेकिन इसके बावजूद मन की निकटता मैं आज तक वैसी ही म   कर रही हू जैसी उस दिन हुई थी घर मे भी यो सभी हैं—मा भी हैं, पापा की जगह डैडी और स्वीटी मेरी बहन, पर पर इन सबके बीच मैंने सदैव ही परायापन अनुभव किया है।

"पापा की मृत्यु के बाद हम राउरकेला छोडकर विजयवाडा चले आये थे फिर यहा हमे वैसा ही नयापन महसूस हुआ जसे लोग नये फैशन के कपडे पहनकर कुछ देर के लिए महसूस करते हैं लेकिन मैं राउरकेला के उस पुराने माहौल से कुछ ले आयी थी जिसका मोह कभी नही छोड सकी—शायद छोडना असभव था"

पत्र के ये दो पन्ने मैं बडी तत्परता से पढ गयी थी स्मृतियो के ढेर मे मुझे एक धूमिल-सा चेहरा उभरता नजर आने लगा था। उस परिवार से मेरा परिचय तभी हुआ था जब मैं राउरकेला गयी थी। उन दिनो हम भी वहा नये-नये ही गए थे वहा का मशीनी जीवन मुझे रास नही आया था दिखावे के बीच हर किसी की असलियत दबी सी लगती कुछ ऐसी ही अनुभूतिया के बीच मिसेज मेहरा से परिचय हुआ था हम अकसर उनके यहा जाते थे। मिसेज मेहरा का सभी कुछ न जाने क्यो बडा सतही महसूस होता है। उ ही के घर स्वामीनाथन से भी मुलाकात हुई थी। तब उनकी बच्ची मीतू दो ढाई वष की रही होगी। बडी प्यारी लगती थी। हमारा जाना मीतू की ही वजह से होता था। यह पत्र मीतू का ही था

"डैडी मेरा पूरा ध्यान रखते हैं मेरी जरूरतो के उभरने से पहले ही वे उन्हे पूरा कर देते है और मुझे सभी कुछ कही ज्यादा मिल जाता है स्वीटी इस बात के लिए झगडती भी है तो डडी कह देते हैं कि मैं बडी हू और डडी की बेटी हू। लेकिन मेरे अदर का घाव फिर छिल जाता है—मैं यही सोचती हू कि डैडी पापा क्यो नही हो जाते? जब डडी पापा का मुखौटा लगा लेते हैं तब मुझे खुशी जरूर महसूस होती है, लेकिन मैं पापा का मुखौटा शीघ्र ही डडी के चेहरे से नोच फेंकती हू और डडी की असलियत खुल जाती है एक भयानक सच साकार होने लगता है

"काच लगी खिडकी के सामने मैं खडी हू सुबह कुहरे से भरी है एक टैक्सी घर के सामने आकर रुकती है मैं देखती हू—खून मे लथपथ पापा

का शरीर, गरदन एक ओर को लुढक गयी है टैक्सी से दो अनजान आदमी पापा को निकाल रहे हैं थोडी देर मे पुलिस की जीप हमारे घर आती है मा रो रही हैं, मुझे आश्चय हुआ कि मां क्यो रो रही हैं ! रोज ही तो मा और पापा मे लडाई होती थी शाम को मा अच्छी तरह सजकर स्वामी नाथन अकल के सग चली जाती और उदास पापा यही मेरे साथ बैठकर कमरे म सिगरेट फूकते रहते ऐसा पिछले एक साल से हो रहा था फिर आज मा क्यो रो रही हैं ? धीरे धीरे सारा दृश्य गडमड होकर जोर-जोर से हिलने लगा था, खिडकी का कांच चटकने चटकने को हो गया था और मैं जोर से चीख पडी थी फिर मुझे कुछ याद नही

'मेरी जब आख खुली तब शाम का धुधलका अपने छोटे-बडे टुकडे लेकर कमरे मे घुस आया था मेरा सिर स्वामीनाथन अकल (जो मुझे तब जरा भी अच्छे नही लगते थे) की गोद मे था वे मेरे बालो को सहला रहे थे सामने मा स्वीटी को लिये बैठी थी मुझे मरा अपना ही घर बडा अपरिचित-सा लगा मा की सफेद साडी के लाल फूल बडे होकर उभरने लगे मुझे पापा का खून से लथपथ शरीर और लुढकी हुई गरदन याद हो आयी थी मैं जोर से चीखी थी, 'सब हट जाओ, मेरे पापा कहा हैं ?' मैं झटके से उठ बैठी और फफककर पता नही कब तक रोती रही।

'मेरे आसू भीतर ही भीतर जमने लगे थे हर ओर अजीब-सा खालीपन महसूस होने लगा था मैंने ढेरो कहानिया पढ रखी थी और मुझे अच्छी तरह पता था कि मरनेवाले कभी वापस नही आया करते मैं इस फुसलावे मे नही आ सकी थी कि पापा अस्पताल मे हैं और ठीक होने पर आ जाएगे पापा के मरने का दुख मेरे मन मे पत्थर-जसा जम गया था बहुत कोशिशो के बाद भी मैं हस नही पाती, खेल नहीं पाती मा से मुझे चिढ होने लगी थी बदल तो वे पापा के रहते ही गयी थो, लेकिन अब उनका चेहरा भी भयानक-सा लगता कभी मेरे सिर पर हाथ फेरतीं तो मेरा सिर दुखने लगता था कई बार मैं यही सोचती कि अगर मा का भी शरीर इसी तरह खून से लथपथ होकर आये तो

स्वामीनाथन अकल, जिन्हें लाख विरोधो के बाद भी मुझे डैडी कहना पडा था और जिनसे मैं पापा के रहते हुए भी बहुत चिढा करती थी,

मुझे मा रो कुछ ठीक लगते स्वीटी भी मुझे अच्छी लगती, मुझे प्यार करती परंतु मैं मन ही मन उसके जीने और खुश रहने के तरीके से ईर्ष्या करती, क्योंकि वह सब कुछ मुझे नहीं मिलता था, उसे पाने की चाह म मेरे हाथ खाली के खाली रह जाते जब कोई मेरे घर मिलने आता और स्वीटी की तरह खुश होकर मैं उससे न मिल पाती तो मेरी बड़ी पिटाई होती डैडी के न रहने पर तो मा को खासा मौका मिल जाता था और वे मुझसे न जाने किस दुश्मनी का बदला निकालती थी, और मैं इन सभी कष्टों को सहकर चुपचाप भीतर ही भीतर सिसकती रहती "

प्रेशर-कुकर की सीटी बज चुकी थी मैंने जल्दी से उठकर गैस बंद कर दी और फिर पत्र पढ़ने के लिए बैठ गयी प्रेशर कुकर की आवाज अब भी सिसक सिसककर आ रही थी मुझे याद आया जब हम दोबारा विजयवाड़ा गये थे, अचानक ही प्रोग्राम बन गया था वहा पुराने परिचितो मे राउरकेलावाली मिसेज मेहरा ही थी—जो अब मिसेज स्वामीनाथन हो गयी थी मेरे मन मे उनसे अधिक मीता से मिलने की लालसा थी

मिसेज स्वामीनाथन के घर पहुचने पर हमने देखा कि मेहरा-परिवार की बिलकुल कायापलट हो चुकी है मिसेज स्वामीनाथन के चेहरे पर इस बात की हलकी-सी भी रेखा न थी जो यह बताती कि कभी वह मिसेज मेहरा थी और मीता ? वह बिलकुल बदल गयी थी उसकी चचल आखो मे अजीब-सा सूनापन था चेहरे पर अवसाद टिककर बैठ गया था तीन वर्ष और अब नौ वर्ष की मीता मे इतना फासला होगा—यह प्रश्न उत्तर की अभिलाषा मे केवल लटककर रह गया था लेकिन मीता उस दिन की मुलाकात को शायद नही भुला पायी थी उसके इस पत्र ने जैसे अनेक प्रश्नो के उत्तर आज खोलकर रख दिये थे—

" आपको याद होगा जब आप आयी थी तब आपने मेरे उदास चेहरे को देखकर यही कहा था, 'मीता कितनी बदल गयी है, बहुत सीरियस हो गयी है ' तुरत ही आपने मा को कुछ सभलते देखा था, और वातावरण को हलका बना दिया था 'क्यो मीता, कवयित्री तो नही बनना है ?' और फिर आप हस दी थी शायद आपने हमारे घर की कहानी सुन ली होगी फिर भी मैंने आपसे बहुत निकटता अनुभव की थी मा अपने ही

रग म थी, आपसे मेरी शिकायतें करती रही थी लेकिन आपन मां की बातो को कोई महत्त्व नही दिया था ऐसा आपने ही पहली बार किया था और मुझम दिलचस्पी दिखायी थी

"समय पखो के सहारे उड रहा था सब कुछ बदल जाता, लेकिन मुझे अपना बाहर भीतर एक-जसा ही लगता एक भयानक सच जो अवसर पाकर जब तब साकार हो उठता बद खिडकी के काच के आरपार उभरता दृश्य—पापा का खून से लथपथ शरीर, लुढकी गरदन—सब कुछ आखो मे गडमड होता रहता, काच चिटकने को होता और मैं चीख पडती अपने आप पर काबू पाने की कोशिश मे घटो रोती रहती रोकर थकने के बाद अजीब विद्रोह जागता और फिर काच के पार खून से लथपथ मा का शरीर दिखायी देता तब मैं विजेता अनुभव करती

"इस वर्ष भी मैं हाइ स्कूल मे परीक्षा नही दे सकी मेरे और मा के बीच विरोध बडी गहराई से पनपते जा रहे थे घर मे इस बात को लेकर काफी तनाव रहता डैडी, जो कभी पापा नही हो सकते थे, हर तरह से मुझे समझने की कोशिश करते कई बार डैडी और मा ने मिलकर मेरी पिटाई की थी पर मैं बहुत पहले से पत्थर हो चुकी थी कही कोई सवेदना नही उभरती थी—भला पत्थर पर कुछ उगता है !

"मा पिछल कुछ महीनो से ठीक नही थी डडी उनका बहुत खयाल रखते शायद स्वीटी का कोई भाई या बहन आनेवाली थी स्वीटी उसके बारे म तरह-तरह के प्रश्न करती कि वह कैसा होगा—दीदी जैसा या मेरे जसा मा मुह विचाकार कहती—तेरी दीदी की शक्ल और अक्ल दोनों ही सबसे अलग हैं फिर वह बडे प्रभावशाली अदाज मे कहती कि तेरा भइया तो तरे-जैसा होगा, तेरे डडी-जैसा

' मेरे छोटे बॉक्स मे मम्मी से छिपाकर एक फोटो रखी है उसे मैं अकसर अकेले मे देख लेती हू—पापा मेरे जैसे थे बिलकुल मेरे ही जसे मैं अक्सर अपने विद्रोही स्वाभिमान को दबाकर मा से कुछ पूछना चाहती आखिर अब मैं बडी हो चुकी थी मुझे भी असलियत जानने का हक था, पर मा के सपाट चेहरे पर मुझे किसी भी सहारे का आभास न मिलता मैं अपनी उभरती जिज्ञासाओ को फिर पत्थर के नीचे दबा देती "

मिस्टर मेहरा की हत्या का समाचार हमने भी अखबार में पढ़ा था गुंडों से उनकी मुठभेड़ हो गयी थी उड़ी-उड़ी खबरें यह भी मिली थीं कि हत्या के पीछे स्वामीनाथन और स्वयं मिसेज मेहरा का हाथ था समाचार पढ़कर तब मुझे लगा था कि मिस्टर मेहरा अपनी हत्या तो न जाने कब कर चुके थे। अब नाटक का पटाक्षेप हो गया मीता का पत्र भी अब लगभग खत्म ही था

"बहुत कुछ लिख गयी लेकिन इस पत्र का आशय अब तक नहीं लिख पायी मां जब स्वीटी को यह आश्वासन देकर अस्पताल गयी कि वे उसकी अम्मा को लेने जा रही हैं तब फिर लौटकर नहीं आयीं आया उनका मृत शरीर बंद कांच की खिड़की से एक बार फिर मैंने वही दृश्य देखा एंबुलेंस से मां का मृत शरीर उतारा जा रहा है कहीं कुछ गड़बड़ नहीं हुआ न ही कांच टूटने का अहसास हुआ इस बार मृत शरीर पापा का नहीं, मां का था डैडी बुरी तरह रो रहे थे स्वीटी भी खूब रो रही थी मैं भी चाह रही थी कि मैं भी वैसा ही रोऊं पर मुझे क्या हो गया है—मैं वैसा नहीं कर पा रही हूं स्वीटी, डैडी मुझे अपने-जैसे ही दयनीय लग रहे हैं सूने घर की छत से हम सब लटक गये हैं, पता नहीं कब तक लटके रहेंगे क्या आप एक बार फिर हमारे यहां नहीं आयेंगी?—मीता"

○ ○

टूटती आवाज

"चाहे जितना चीखो चिल्लाओ, पर भला किसे फिकर है ?"

फट फट फट

झटके से बिखरी हुई किताबो को समेटते हुए मीरा की निगाह खिड़की से टिके आइने से जा टकराई हाथ थम गये माथे पर तना बल पलको पर झुक आया मीरा ने चाहा थोड़ी देर तो अपने को गौर से देखे खिसककर जैसे ही आइने के पास जाने को हुई, हल्के से धक्के से सारी किताबें नीचे गिर गईं खिड़की पर रखे कागज [redacted] गद पड़े मल फूल गुल दस्ते मे हिलने लगे मकड़ी जल्दी-जल्दी फूलो पर बनाए जाले मे उलझने लगी

"मीरा रा "

एक कमजोर और थकी हुई आवाज थी मीरा रोज सुनती है शायद इसलिए कि सारी सवेदनाओ ने एक साइंटिफिक फक्ट ढूढ लिया है इतने बच्चो को ज म देकर मा के शरीर म रह ही क्या गया है ? मीरा ने कमरे को एक बार देखा, ग दगी से उबकाई आने लगी उसे क्यो नही समय मिल पाता है कि सभी कुछ व्यवस्थित कर ले किताबो के गटठें को वैसे ही मेज पर पटककर दूसरे कमरे मे घुसी और भी अधिक मटमली रोशनी सफद न कहा जानेवाला जगह-जगह से फटा चादर, उठी रूईवाला लिहाफ और उसमे लिपटा मा का जज र शरीर

'बेटी दूध बचा हो तो थोड़ा सा दे जा बड़ी भूख लगी है "

मां का लिहाफ ठीक करते हुए मीरा को याद आया कि बस की क्यू [redacted] अलग होकर लोगो ने टैक्सी कर ली थी उसे देर तक यू ही खड़ा रहना पड़ा था

टन टन टन एक दो तीन और फिर पूरे ग्यारह आज भी

औकात इतन गोल दायरे जैसा बढ़ते बढ़ते सुपरिंटेंडेंट साहब का आलू हो गया ओफ कैसी भद्दी तरह से उसे देख रहे थे, जब वह फाइल पर दस्तखत कराने गई थी मीरा डरकर पीली हो गई थी

और सुपरिंटेंडेंट साहब भद्दे तरीके से हंसते रहे थे मेज से निगाह जब टिकी तो ऑफीसराना रोब फूट पड़ा, 'मिस मिश्रा' आवाज में गरज थी

"जी सर" सहमकर मीरा बोली

"आपको इस ऑफिस में काम करते दो वर्ष हो गये लेकिन आपको रहने का तरीका अभी तक नहीं आया मिस मीठर्स और मिसेज अहलूवालिया भी तो तुम्हारे साथ हैं उनसे रहन सहन को अपनाकर ही तुम यहां रह सकोगी"

'जी' मीरा को अन्तिम वाक्य बिजली का शॉक जैसा लगा.

गिद्ध जैसी हिंसक दृष्टि से देखते हुए उन्होंने मीरा का हाथ पकड़ा. मीरा कांप उठी फाइलें धम्म से गिर गयीं सुपरिंटेंडेंट साहब का हाथ पीछे लौट गया मीरा ने तेजी से फाइलें समेटीं और कमरे से बाहर निकल गई. फिर तो उस सभी की आंखों में वही चहक, वही भेद दिखाई पड़ने लगा.

मकड़ी जाल बुनती जा रही थी, उसकी जाल में फंसी मीरा [illegible] गई थी उसकी तड़प धीरे धीरे कम होती जा रही थी, [illegible] आवाज भी कम हो गई थी अन्तिम [illegible] औकात जान ही

"दीदी, मेरी फाइल लाई हो ?" नीरू की आवाज ने चौंका दिया वह उसी तरह नीरू को देखती रही नीरू का दुपट्टा जगह-जगह से फट रहा है मिस पीटर्स के बड़े गले से झांकती उनकी छाती और मिसेज अहलूवालिया के बेहद चुस्त कपड़ो में जकड़ा उनका तन लेकिन वह स्वयं भी तो ओफ चीखकर मीरा ने अपना सिर टेबिल पर पटक दिया

'दीदी " नीरू ने मीरा का सिर थाम लिया, 'तुम्हें क्या हो गया है ? कैसी हो रही हो ?"

मकड़ी के जाल में फंस आई दूसरी मक्खी भी तड़प रही थी भन्न-भन्न की आवाज फिर कमरे में भरने लगी थी नीरू कहे जा रही थी, "दीदी तुम कहती क्यों नहीं हो ? फाइल नहीं लाई तो क्या हो गया ? अपनी हालत का तो हमें पता है मैं तो यही सोचती हूँ कि कुछ महीने और बीत जाए, फिर तो मैं भी तुम्हारा साथ दूंगी "

'नहीं नहीं नीरू तू मेरी जैसी कभी मत बनना "

मीरा की आवाज में मक्खी जैसी ही तड़प थी शाम की सर्दीली हवा चुपके से कमरे में घुस आई थी मीरा को लगा, जैसे बर्फ-सी जड़ता चारों ओर से उसे घेरे है उसने साड़ी के पल्ले से ठीक से पीठ को ढका और चुपचाप जाकर लेट गई

दीदी, कब उठोगी चीनी भी नहीं है चाय कैसे बनेगी ? बाबू तो सुबह से ही घूमने निकल गये हैं सब बच्चे शोर मचा रहे हैं क्या करूं ?"

पर आवाज कम्बल के भीतर पहुंचकर भी मीरा को नहीं जगा पाई आखिर नीरू ने कम्बल हटाया, तो मीरा का माथा जलता हुआ मिला

"अरे दीदी तुम्हें कितना तेज बुखार है "

मीरा बेसुध बड़बड़ा रही थी "मुझसे वह सब नहीं होगा मैं ऑफिस नहीं जाऊंगी ' 'दीदी दीदी 'नीरू ने मीरा को झकझोर दिया तपती हुई बोझिल पलकें खुलीं और मीरा रो पड़ी, "नीरू, तू बाबू से कह दे, मैं ऑफिस नहीं जाऊंगी "

कमरे मे रात की घुटन अभी भी भरी हुई थी नीरू ने खिडकी का एक पल्लू खोल दिया सद हवा धीरे धीरे भरने लगी सामने छत पर नई ब्याही लडकी अपनी लाल चुनरी फैला रही थी हाथ के कगन एक-दूसरे से टकराकर गुनगुना रहे थे दीदी की साथिन है कैसी भर गई है एक और झोका नीरू को सिहरन दे गया

"ाम का धुधलका कमरे मे फिर से कब भर आया, कोई नही जानता मीरा वैसी ही कम्बल मे लिपटी पडी थी बुखार कुछ कम था बाबू हड-बडाते हुए कमरे म आए "नीरू, ओ नीरू, कहा मर गई अरे जल्दी से दो प्याली चाय बना, मीरा के आफिस का सुपरिटेंडेंट आया है ' और लपकते हुए मिश्रा जी मीरा का कम्बल हटाकर बोले, "उठ बेटी, तेरे ऑफिस का सुपरिटेंडेंट आया है तेरी बीमारी का हाल सुनकर देखने आया है बडा नेक और शरीफ है जरा अपना बिस्तर ठीक कर ले "

मीरा न झटके से कम्बल फेंक दिया मिश्राजी जसे लपकते आए थे, वैसे चले भी गये मीरा कुछ बोलना चाहती थी, पर आवाज जसे कही गहराइ मे डूब गई थी कुछ ही पल म मीरा ने सुना, मिश्राजी कह रहे थे 'हुजूर, बस आपकी ही कृपा से इन आठ बच्चो का पेट पल जाता है अगले साल तक मेरी एक और बेटी आपकी सेवा के लिए तयार हो जाएगी " अतिम वाक्य मे कुछ गव था उसे और भी प्रभावशाली बनाने के लिए मिश्राजी घिघियाई हसी बडी देर तक हसते रहे

मीरा का लगा कि बाबूजी की आवाज टूटती जा रही है जसे जबरन कोई घिसा रिकाड बजाता ही जाए मीरा न अपना गोरा नगा सूखा हाथ देखा उठी और कमरे की चिटखनी बन्द कर ली खिडकी पर रखे छोटे से शीश म अपन शरीर को देखती रही मकडी के जाल मे फसी मक्खिया तडपकर मर चुकी थी उनकी सूखी लाशें जाले मे चिपकी हुई थी

मीरा इतनी अधिक मासल कि मिस पीटस और मिसेज अहलू-वालिया भी नही पास खडी उसकी परछाई दूर होती जा रही थी उसने दीवाल पर नजर दौडाई धूल और कालेपन के बीच बाबूजी घिघिया रहे थे, मा कराह रही थी, नीरू फटे दुपट्टे मे अपने को छिपा रही थी और बच्चे चाय तथा बासी रोटी के लिए आपस मे छीना-झपटी कर रहे थे

शीशा फिर उसके सामने था शीशा बड़ा होता जा रहा था मीरा की घुटन जैसे उसके रूप को उभार रही थी

पी पी पी

दीदी आई दीदी आई सुपरिटेंडेंट साहब की गाड़ी मिश्राजी के दरवाजे पर खड़ी थी मीरा गाड़ी से उतरी बच्चो ने उसे घेर लिया उसके हाथ मे डोरे से बधे कई बडल थे मीरा ने मुड़कर मुस्करा दिया, सुपरिटेंडेंट साहब को 'विश' किया और गुनगुनाती हुई घर के अन्दर हो गई

० ०

ठहरा हुआ दुख

आज हेमन्त पूरी तरह ऑफ 'मूड' मे है, और मीना पर खीझे चला जा रह है मीना चुप रहना चाह रही है, पर हेमन्त का स्वर चढता ही जा रहा है

"तुम्हीने सबकी आदत खराब कर दी है, हर जगह ढीलापन नौकर रखने का फायदा भी क्या ? जब सारा काम खुद ही करो और पसे की मार अलग सहो दरअसल तुम्हारे अन्दर टक्दस हैं ही नही, और यही कारण है कि हर समय बीमार हो जाती हो " हेमन्त का लेक्चर पूरे जोर पर था काम जितनी जल्दी निबटना चाहिए था, मीना के हाथ उतन ही धीरे धीरे उठ रहे थे हेमन्त के ऑफ मूड और काम की तत्परता का सन्तुलन टूटने को हो रहा था यह तय था कि मीना के एक वाक्य से ही हेमन्त को पिघलते देर नही लगेगी और टूटते हुए सन्तुलन को ढेर सी ताकत मिल जायेगी पर मीना आज चुप ही रहना चाह रही थी फिर हर बार हेमन्त को अपनी ओर मोड कर उसके अधिकारो का वजन घटाना क्या ठीक था? हेमन्त कुछ गलत तो नही कह रहा है मीना की आठ दस दिन की बीमारी म महरिन अक्सर देर से आई है, हेमन्त को घर के सारे काम के साथ बतन भी साफ करने पडे है

महरिन कभी समय पर नही आती है पर जाने इस बुढिया से मीना के मन मे कोमलतम भाव जुड गये है

हेमन्त अभी भी गुस्से से भरा बैठा है मीना लच का डिब्बा उसे देते हुए मुस्करा देती है हेमन्त और झल्ला उठता है "तुम्हे पता है मरी बस छूट गई, और आज आफिस जाने म कितनी परेशानी होगी देर हो गई है "

"कल से " मीना कहते कहते रुक जाती है, हेमन्त उसकी विवशता

से पिघल जाता है, और उसे बाहों म भर लेता है

"मीनू, तुमसे कितनी बार कहा कि तू बीमार न पड़ा कर बीमार पड़ जाती है ये कोई अच्छी बात है ?"

' अच्छा अब बीमार नही पड़ूगी, बस "

अपने छोटे से घर को सवारने का कितना प्यारा सपना है उसके पास, पर अभी तक सारे सपने, किसी मखमली जिल्द मे बद पड़े हैं

हेमन्त जा चुका है महरिन के आने के आसार आज भी बहुत कम दिखाई दे रहे हैं मीना आज उससे अच्छी तरह बात कर ही लेगी आखिर यह क्या तमाशा बना रखा है जब देखो तब कालबेल बज उठती है महरिन कालबेल बजाकर तो नही आती है फिर कौन हो सकता है ? रजनी धब्ब धब्ब करती सीढिया चढ रही है रजनी महरिन की पोती है, मीना को समझने म देर नही लगती कि आज महरिन फिर लेकिन अपने पर काबू पाकर वह रजनी से ही पूछती है "क्या बात हुई ये रोज रोज ' मीना अपनी खीझ को जब्त नही कर पाती है

"बात यह है कि कल रात मेरा चाचा कालका से आया था उसकी तबियत खराब थी, और वह रात को ही मर गया "

मीना को करेंट छू गया "ये क्या कह रही है, तेरा कालका वाला चाचा भी "

"हा वो भी मर गया अम्मा चार-पाच दिन मे आयेगी" रजनी के वाक्य से यह स्पष्ट था कि वह दिये गये काम की जिम्मेदारी पूरी कर लेना चाह रही है मीना स्तब्ध रह जाती है महरिन के तमाम दुखो पर एक और परत चढ गई है अभी साल भर पहले ही तो उसका जवान बेटा मरा है जिसके दुखो का नासूर जब तब फूट पड़ता है और अब ? दुखो के तमाम कटील जगल से क्या कोई महरिन को घसीट सकता है ?

रजनी का चेहरा पूरी तरह सपाट है, कोई आते जाते भाव की हल चल नही है वैसे उसके उम्र की पहुच भी इतनी नही है मीना पूछती है— "कौन है तेरी अम्मा के पास ?"

'होगा कौन रात से अम्मा चाचा की मिट्टी लिये अकेली है '

'और तेरे अड़ोसी-पड़ोसी मिटटी उठायेगा कौन ?"

"अडोसी पडोसी ऊह " रजनी के वाक्य मे अडोसी-पडोसी के लिये पूरी तरह हिकारत है फिर कुछ गर्व से बोली—"मेरा फूफा आ जायेगा वही मिट्टी उठायेगा"

रजनी जाने लगती है। मीना कुछ भी सोच नही पाती है वह सुन रहा है, महरिन कह रही है 'बहू जी मेरा दुख ठहर गया है ' मीना को महरिन का ठहरा हुआ दुख बडा विचित्र लगता है सृष्टि के गतिक्रम मे कुछ भी तो ठहरता नही है महरिन का दुख ही कैसे ठहर गया है ?

मीना जाती हुई रजनी को पुकार लेती है—"अम्मा न तुमसे पैसा के लिए कुछ कहा है ?"

रजनी जवाब म कुछ नही कहती है मीना उसे रुकने के लिए कहकर अन्दर चली जाती है छब्बीस तारीख ?क्या दे रजनी को? तभी उसे बच्चो के गुल्लक की याद हो आती है गुल्लक से दस रुपये की रेज़गारी को निकाल कर कपडे मे अच्छी तरह बाध कर वो रजनी को थमा देती है मीना जाती हुई रजनी को देख रही है महरिन की थकी आवाज बार बार मीना के कानो मे गूज रही है

"बहू जी, मेरे चार लडको मे यही वाला लडका मेरा बहुत ख्याल रखता था कहता था 'अम्मा तू बतन मत घिसाकर 'लेकिन बहू जी मुझे इतनी उम्मीदें देकर मेरे सग बेवफाई कर गया आगरा के बड अस्पताल मे उसे भर्ती कराया था बचा खुचा सारा चादी का जेवर बेच डाला लेकिन, वह बेईमान मेरा न हो सका उसका भी क्या दोष दुख तो सबके हिस्से मे होता है पर आता जाता रहता है मेरे हिस्से वाला दुख ठहर गया है यह समझो कि जम गया है"

उस दिन महरिन फिर देर से आई थी मीना चावल साफ कर रही थी ऐसे मौकों पर अक्सर ही महरिन और मीना की बातचीत शुरु हो जाती है पिछले काफी दिनो से महरिन रजनी को लेकर काफी परेशान है। रजनी स्कूल म अक्सर कापी पेन्सिल खो आती है मीना कहती है—' इसे तुम इसके बाप के पास क्यो नही भेज देती '

"बहू जी इसकी मा मर गई है बचपन से मैंने ही इसे पाला मेरे लडके ने दूसरी शादी कर ली है तुम ये जानो कि सौतली मा के जालिम हाथो मे

इसे डालना नही चाहती"

मीना महरिन को समझाती है—' लेकिन तुम्हारे पास इतना पैसा भी तो नही है न हो इसे किसी के घर लगा दो दस-पन्द्रह ऊपर से मिल जायेंगे खाने-पीने का भी ठिकाना हो जायेगा फिर दिन भर इधर उधर भटकेगी भी नही"

'यह तो तुम ठीक रही हो, बहूजी पर मेरे मन म है कि चार अक्षर पढ लेती तो अपना भला-बुरा आप समझ लेती कहो इसके मन म ये न रह जाये कि मा नही है तो नौकरी करके अपना पेट पाल रही है फिर हमारी जात म जो चार अक्षर पढा हो उसे नौकरी अच्छी मिल जाती है"

मीना स्पष्ट देख रही थी कि जिस दायरे मे खडी होकर वह महरिन को सलाह दे रही थी वह काफी सकुचित है

मीना के ही घर की लाइन मे चौथे नम्बर के घर म वद्ध महिलायें रहती है एक मकान मालकिन और दूसरी उसकी किरायेदारिन मकान मालकिन की विधवा बेटी है जिसका दुख उसके कधो को तोडे डाल रहा है किरायेदारिन स्वय विधवा है और इसी वष उसके जवान इजीनियर बेटे का निधन हो गया है बेटे की मौत ने बुढिया को पूरी तरह झिझोड दिया है रो रोकर आखें धूमिल हो गइ उसका छोटा बेटा भी इजीनियरिंग कर चुका है और मा की दौड धूप के बाद उसे मत भाई की जगह पर ही नौकरी मिल गई है दुखो की मारी यह वद्धा काफी दौड धूप भी कर लेती है मृत बेटे के नाम से किया हुआ जीवन बीमे का पसा मिला है उससे घर बनवाने के लिए जमीन ले ली है और इन दिनो सीमट की बोरियो के लिए दौड धूप कर रही है गली म ये दोनो वद्धाए पतली और मोटी माता जी के नाम से जानी जाती हैं मीना की महरिन इन दोनो के घर काम करती है उसीने बताया था कि पतली वाली वद्धा का और उसका बेटा एक ही महान म मरे हैं महरिन के ही प्रसग मे मीना अक्सर इन पतली और मोटी माताओ से बतिया लेती है पतली वाली बुढिया अक्सर यह भी कहती रहती है कि देखो जी, इन छोटी जाति के लोगो का तो दुख सहने की आदत हो जाती है एक मुझे देखो मरे बटे की मौत न तोड कर रख दिया है और

बुढिया चार घर का काम करके चैन से सो भी लेती है सब उसकी माया है

महरिन और पतली वाली बुढिया दोनो ही दुखी हैं किन्तु स्थितिया के अनुरूप दोनो के पैमाने अलग अलग हैं पतली वाली बुढिया का दुख बहता हुआ है, जबकि महरिन का दुख ठहर गया है इस बीच महरिन पतली वाली बुढिया से कुछ चिढ सी गई है अक्सर मीना से कहती है—"तुम्ही बताओ बहू जी, मेरे और इसके दुख का कोई मुकाबला है क्या ?"

मीना अक्सर महरिन के लिए दो रोटिया बचा लेती है उस दिन मीना ने गोश्त बनाया था महरिन के आते ही मीना ने उससे कहा "महरिन य रोटी पहले खा लो"

"बहू जी, तुम 'मीट' खाती तो नही हो, पका कैसे लेती हो ? 'मीट' मे कभी शलजम डालकर पकाना, बहुत अच्छा पकता है यो अपनी अपनी पसन्द है

"बहू जी मेरे आदमी को 'मीट' बहुत पसन्द था, आधा किलो मीट ले आता और पाव भर शलजम अपने चार दोस्तो को बुला लेता फिर, जो शराब का दौर चलता तो सबेरा हो जाता मेरे बच्चे ललचाई निगाह से देखते मैं डर के मारे बच्चो को लेकर कोठरी म बैठ जाती पकाते समय एक आध बोटी खिसका देती थी, उसी से बच्चो को फुसला लेती"

"अरे, तुम्हारा आदमी ऐसा करता था और तुम्हें बुरा नहीं लगता था ?'

"काहे का बुरा बहू जी वह बहुत नेक आदमी था बुरी सगतो न उसे बिगाडा शराब बहुत पीने लगा था कोई कुछ काम को कह दे कभी मना नही करता था मैं सुबह स लेकर बारह बजे रात तक काम करती दुनिया ने मुझ पर भले ही अगुली उठाई हो पर उसने मुझे कभी बदचलन नही कहा और बहू जी तुमसे सच कह रही हू, मैंने भगवान से दो ही चीजें मागी एक ये कि मैं कभी बुरा काम न करू और दूसरी ये कि कभी चोरी-बेईमानी न करू और ईश्वर ने मुझे आज तक इन चीजो से बचाया है"

मीना सोच रही है महरिन और भी तो कुछ अपनी जिन्दगी के लिए माग सकती थी लेकिन उसने तो अपने आस पास तमाम कटीले जगल

उगा लिये हैं धुंधलाई आंखों से दूर-दूर तक जिंदगी का धुंध देखने वाली महरिन अकेले कमरे में जवान बेटे की लाश लिये बैठी होगी उसे दुख की परतों पर एक और परत चढ़ गई होगी रजनी कब की जा चुकी है मीना बड़ी देर से यूं ही खाली बैठी है अनायास उसकी निगाह घड़ी पर जाती है बारह बज रहे हैं अभी खाना तैयार करना है रोहित के आने का समय हो रहा है, फिर हेमन्त ने आज शाम चार बजे डॉक्टर से भी टाइम लिया है काम का अलाम मीना के चारों ओर बजने लगा महरिन वाला चैप्टर जल्दी ही बन्द हो गया

रोहित को लेकर मीना तीन बजे ही घर से निकल पड़ती है, बस जल्दी ही मिल जाती है विलिंगडन अस्पताल के बस स्टाप पर हेमन्त दूर से ही दिखाई दे जाता है

हेमन्त को दूर से ही देखकर रोहित मचल उठता है हेमन्त मुस्कराते हुए बताता है कि डाक्टर तो आज छुट्टी पर है मीना बुरी तरह खीझ उठती है— 'तुम फोन भी तो कर सकते थे, इतनी दूर आकर "

"लेकिन मुझे भी तो यहीं आकर पता चला चलो इसी बहाने तुम घर से बाहर तो निकलीं "

"ऊंह" मीना चिढ़ जाती है हेमन्त रोहित के प्रश्नों का उत्तर देने लगता है कि ये अस्पताल है और यहां से ऑफिस कितनी दूर है रोहित जिद कर रहा है कि उसे कनाट प्लेस घूमना है हेमन्त मीना से कहता है—"चलो ऑफिस चलते हैं कुछ खा पी लेंगे '

' ऑफिस आकर क्या होगा '

"नहीं मम्मी चलो न " रोहित जिद करता है

"अच्छा चलो, बस स्टॉप पर जूस पीते हैं "

मीना के हाथ में जूस का गिलास है लेकिन वह कुछ खोई खोई सी है हेमन्त समझ जाता है कि आज जरूर कोई न कोई फितूर दिमाग में है हेमन्त मीना के निकट आ जाता है—"क्या बात है आज बहुत ऑफ हो—?'

"हां, मन अच्छा नहीं है"—मीना टालना चाहती है

इस बार मीना हेमन्त को टाल नहीं सकी, और महरिन के दूसरे

जवान बेटे के मरने का समाचार सुनाकर हेमन्त के चेहरे पर संवेदना पढने की कोशिश करने लगी

"ये तो बुरा हुआ इसका मतलब पानी का काम फिर तुम्ही को करना होगा"

दो भरी हुई बसें बिना रुके धूल उडाती हुई निकल जाती हैं सामने अस्पताल की ओर से दस-बारह महिलाओ का झुड चला आ रहा है सभी बेतहाशा चीख चीख कर रो रही हैं छाती पीट रही हैं और बालो को नोच रही हैं निश्चय ही उनके किसी सम्बन्धी की मौत हो गई है सभी मे होड सी लगी है कि कौन कितने अधिक दुःख का प्रदर्शन कर सकता है रोहित धीरे से हेमन्त से कहता है—"पापा वो नीली शलवार वाली बुढिया ज्यादा रो रही है" मीना रोहित को झिडक देती है

मीना यहा भी अकेली अधेरी कोठरी मे महरिन को ही देख रही है धुधलाई पनीली आखें, सामने जवान बेटे की लाश, धुधलाई आखो से जिन्दगी के लिए दृष्टि और दूर जा भी तो नही सकती दुखो की परतें बहुत सख्त हो गई हैं पिघलना तो दूर अब वे नुच भी नही सकती

सामने एक बस आकर रुकती है रोती हुई महिलाओ मे से एक उसका नम्बर पढती है सभी उसकी ओर दौड पडती हैं बस भरी हुई है लेकिन धक्का मुक्की के बाद भी वे उसमे चढ नही पाती बस चल देती है वे फिर स्टॉप के चबूतरे पर आकर बैठ जाती हैं और जैसे कुछ याद आ जाये फिर उनका सामूहिक क्रन्दन आरम्भ हो जाता है छाती पीटने लगती हैं अपने अपने बाल नोचने लगती हैं हेमन्त बार-बार घडी देख रहा है हमे जिस बस मे चढना है अब तक नहीं आई दूर से फिर एक बस आती हुई दिखाई दे जाती है महिलायें अपना क्रन्दन समाप्त कर उठ खडी होती हैं हड-बडाती हुई अपने को समेटती हैं और बस मे चढने के लिये धकमपेल करने लगती हैं बस चल पडती है मीना जाती हुई बस को देखती है

जाता हुआ दुख, ठहरा हुआ दुख, दोनो अलग-अलग हैं

उनका पमाना एक नही हो सकता

निर्णय

सब जा चुके थे। सुबह से मचने वाली हलचल पर स्थाई रूप से मुहर लग गई थी घर की अस्तव्यस्त स्थिति इस बात की परिचायक थी कि थोड़ी देर पहले घर युद्ध का मैदान बन चुका होगा चारों ओर सबके उतारे हुए कपड़े बिखरे पड़े थे डाइनिंग टेबल पर जूठे बर्तनों का अबार लगा था नेहा सुबह से सबकी जरूरतों को पूरा करने में लगी थी सबके जाते ही उसे लगा कि उसका शरीर बहुत थक रहा है कुर्सी पर बैठते हुए उसने बसाखिया एक किनारे रख दी सुबह की चीख-पुकार अभी भी उसके कानों में गूज रही थी जाते-जाते मम्मी भी उसे कई काम गिना गई थी रोज ही ऐसा होता है घर का हर सदस्य कहीं न कहीं जाता है सबके पास जिंदगी की रफ्तार है केवल नेहा के ही पास जिंदगी को गति देने के लिए ये बैसाखिया हैं लेकिन इन्हीं बैसाखियों के सहारे हायर सैकण्डरी की परीक्षा पास की है पढ़ना तो वह आगे भी चाहती थी लेकिन मम्मी पापा ने कहा कि अब आगे पढ़कर क्या होगा ? फिर साथ तो यह था कि दादा जी की मृत्यु के बाद घर बिल्कुल अकेला छोड़ा भी नहीं जा सकता था कम से कम नेहा के रहने से घर अकेला तो नहीं होगा पारू दीदी कालेज जाती हैं, अखिल स्कूल और मम्मी और पापा की तो नौकरियां हैं ही घर की रखवाली के लिए नेहा से उपयुक्त कोई हो ही नहीं सकता था

आज नेहा बहुत थक रही थी घर का बिखराव भी कुछ इतना अधिक था कि उसे समेट पाने की कल्पना से ही नेहा और अधिक थक रही थी माई भी अभी तक नहीं आई थी बसाखियों पर ध्यान जाते ही नेहा बैसाखियों का सहारा लेकर उठ खड़ी हुई आहट ले ले, शायद पड़ोस में माई आ गई हो नेहा बालकनी में आई ही थी कि सत्येन की साईकिल उसे दिखाई दे गई दीदी कालेज जा चुकी हैं, यह जानते हुए भी सत्येन क्यों आ रहा है ?

नेहा स्वय भी इसका कोई बौद्धिक हल नही खोज सकी है कि सत्येन को देखते ही क्यो वह एक अन्दरूनी खुशबू से भर उठती है ? नेहा इस बात को अच्छी तरह जानती है कि इस महक को फैलने का अवसर कभी नही मिलेगा लेकिन, वह अपनी अन्दरूनी महक को दबा भी नही पाती है आराध्य से बिना कुछ चाहे भी उसकी अचना की थाली सज उठती है जो प्रकट हो सकें, वे सभी इच्छाए तो नेहा की ही तरह पगु हैं पर वह यही सोचती है क्या मदिर मे दीप बारने का भी उसका अधिकार नही है सत्येन को सामने खडा देख दप से उसका दीप जल उठा था

"पारू कहा है ?"

"कालेज"

' लेकिन, आज तो उसे कुछ लेट जाना था और उसने मेरे साथ चलने को कहा था," सत्येन एक साथ ही सब कुछ बोल गया था झुझलाया हुआ सत्येन गुस्से मे नेहा को और भी अच्छा लग रहा था एक क्षण ठिठक कर नेहा बोली, "लेकिन इस तरह आप परेशान क्यो हो रहे हैं ? अन्दर आइए ठण्डा पानी वानी "

"नही नही मुझे देर हो रही है" सत्येन ने साईकिल घुमानी चाही थी कि नेहा बोल पडी, "बात यह थी कि "

सत्येन झटके से साईकिल से उतर पडा

"क्यो क्या किसी और के साथ "

"आप अन्दर आइए, धूप में आए हैं, ठडा पानी पी लीजिए, फिर बताती हू"

पराजित सत्येन नेहा के आग्रह को टाल न सका नेहा जानती है कि सत्येन पारू दीदी को बहुत चाहता है बात भी सच है वह किसी एक को नही चाहती है उसकी अपनी कसौटी पर आज तक कोई खरा नहीं उतरा सत्येन शायद यह नही जानता कि आजकल रवि को पारू दीदी परख रही हैं शायद रवि उनकी कसौटी पर खरा उतर आए, क्योकि वह रईस बाप का बेटा है पारू दीदी को धरती पर पर नही रखने देगा पर ऐसे कई रईसो को पारू दीदी अपनी कसौटी पर खरा साबित कर चुकी हैं सबने सिर्फ सपने ही दिए हैं सत्येन काफी कुछ जानता है, फिर भी पारू उसकी

कमजोरी है उसका आत्म-सम्मान उसकी इस कमजोरी के आगे काफी निरीह बन जाता है

नेहा ने बताया कि पारू दीदी रवि के साथ सुबह स्कूटर पर गई है सत्येन का चेहरा और भी अधिक बुझा-बुझा सा हो गया नेहा यही सोचती रही कि आखिर उसके मम को कुरेदने का उसे अधिकार ही क्या था ? सत्येन उठ खड़ा हुआ साईकिल को उसने ऐसे थाम लिया था जसे कोई मरी हुई लाश हो बसाखियों से टिकी नेहा देर तक सत्येन को जाते हुए देखती रही जमा हुआ दद अनजाने पिघलने लगा था अनजाने ही नेहा सत्येन के काफी करीब आ गई थी सुखद अनुभूतियो की तेज धारा में नेहा बहती जा रही है, पता नही तिनके को कौन सा सहारा मिलेगा यह प्रश्न सलीब पर पगु बना टगा था

पारू दीदी अक्सर कहती हैं कि मम्मी नेहा को बहुत चाहती है नेहा इस बात को अच्छी तरह जानती है कि प्यार के नाम पर ढेरों दया की भीख जब तब उसकी झोली मे आ गिरती है लोगो की दया दृष्टि ने उसे इतना अधिक कुचला है कि अब उसे अपने पगु हुए अस्तित्व पर कराहना भी अच्छा नहीं लगता मम्मी अक्सर लोगो के बीच नेहा के बेचारेपन को लेकर फायदा उठाती हैं लोगो की सहानुभूति से अपने को सहलवाना उन्हे क्यों अच्छा लगता है ? नेहा आज तक नही समझ सकी नेहा चाहती थी कि मम्मी उसे आगे भी पढ़ाए नेहा चाहती है कि पढ़ लिख कर वह अपने बल पर जी सके फिर उस जसे लोगो को तो आजकल सरकार से भी पूरी सुविधा मिलती है यों भी उसे हायर सकण्डरी की परीक्षा तक पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति मिलती रही है उसने अच्छे नम्बरों मे परीक्षा पास की थी कालेज की पढ़ाई के लिए उसके मन मे बहुत उमग थी लेकिन मम्मी ने जब कहा, नेहा को कालेज मे पढ़ाकर क्या होगा ? उस दिन नेहा बहुत दुखी हुई थी उस दिन उसने चाहा था कि बैसाखियों को तोड दे और दौड़ती हुई कहीं दूर चली जाए पर असहाय नेहा उन्हीं बसाखियों को पकड़े देर तक रोती रही संयोग से उस दिन भी सत्येन पारू दीदी से मिलने आया था और हमेशा की तरह पारू दीदी घर मे नहीं थी नेहा को बहुत उदास देख कर सत्येन उसके पास बैठ गया था नेहा अपने को संभाल

नही सकी थी और सत्येन के सामने ही देर तक रोती रही थी उस दिन सत्येन ने उसे आश्वासन दिया था कि वह नेहा को प्राइवेट परीक्षा के लिए तैयारी करवा देगा सत्येन की सहृदयता ने नेहा को एक नई ज्योति से दीप्त किया था घर मे पल रहे अपने बेचारे अस्तित्व से आहत हो रहे मन पर पहली बार उसने ठडा लेप महसूस किया था

नेहा ने प्राइवेट परीक्षा का फार्म भर दिया था सत्येन अक्सर उसे पढाई म मदद कराता रहता किताबो आदि की व्यवस्था भी कर देता और नेहा के अन्तर-मन की सुवास ने सत्येन की सहृदयता को अपने कोमलतम भावो से जोड लिया था लेकिन दूसरी ओर नेहा यह भी जानती थी कि सत्येन के लिए पारू दीदी एक कमजोरी है और उसकी निकटता पाने के लिए ही सत्येन नेहा के लिए इतना कुछ करता है लेकिन नेहा जब भी पारू दीदी से सत्येन की बात करती है, पारू दीदी सत्येन को अहमक और लेखक कह कर मजाक बनाती है और जिन दिनो उसकी कसौटी पर कोई नही होता तो उसी अहमक लेखक सत्येन के साथ प्यार का अभिनय भी कर डालती है पारू दीदी कई तरह के व्यक्तित्व को एक साथ जी लेती है उसे सुबह, शाम, दोपहर, रात सभी का फर्क अच्छी तरह मालूम है काश! नेहा इस सच्चाई से सत्येन को अवगत करा सकती पर कहीं सत्येन उसे गलत न समझ बैठे

उस दिन शाम को मम्मी ने घर मे एक छोटी सी पार्टी का आयोजन किया था पारू दीदी का उन्नीसवा जन्म दिन था पारू दीदी ने अपने अनेक मित्रो को आमन्त्रित किया था नेहा ने बहुत जोर देकर कहा था कि सत्येन को भी बुलाओ लेकिन पारू दीदी और मम्मी एक ओर हो गई थी सत्येन पर कुछ आरोप लगाए गए कि वह ढग के तो कपडे पहनता नही है, पार्टी मे क्या आएगा फिर प्रेजेन्टेशन की भी उससे कोई उम्मीद नही है पारू दीदी ने नेहा का मजाक बनाया था कि नेहा के जन्मदिन पर सत्येन ही मुख्य अतिथि होगा नेहा दुख से सिहर उठी थी काश कि सत्येन यह सब कुछ जान पाता सयोग से उसी पार्टी वाली शाम सत्येन पारू दीदी को यह बताने आया था कि राज्य सरकार की ओर से उसकी पुस्तक पर तीन हजार रुपये का पुरस्कार घोषित हुआ है पर पार्टी मे आए लोगो के बीच

बिन बुलाए मेहमान का उपहास उसे बुरी तरह मर्माहित कर गया मम्मी के रोकने पर, न चाह कर भी उसे देर तक बैठना पडा पारू दीदी अपने मित्रो के बीच व्यस्त थी नेहा सत्येन के मम को समझ रही थी वह पत्थर के बुत की तरह चुपचाप बैठा था

कई महीने बीत गए, सत्येन पारू से मिलने नही आया और नेहा को आश्चय इस बात का था कि कालेज से लौट कर पारू दीदी रोज ही सत्येन के बारे मे पूछती नेहा का इस वष बी० ए० का अंतिम वष था वह अपनी परीक्षा की तैयारी म लगी थी परीक्षा समाप्त हो गई थी इस बीच सत्येन एक बार नेहा के पास आया था और नेहा को पढने के लिए दी गई सभी किताबें वापस ले गया था नेहा चाहती थी कि पारू दीदी के बारे म कोई चर्चा हो पर सत्येन बहुत जल्दी चला गया था गर्मिया समाप्त हो गई थी, परीक्षा फल घोषित हुआ नेहा ने प्रथम श्रेणी मे बी० ए० की परीक्षा पास की थी, नेहा के नाम सत्येन का बधाई पत्र आया था इस बीच पारू दीदी बहुत उदास रहने लगी थी उनके कई साथी जिन्हे वह अपना जीवन साथी बनाना चाहती थी, वे अपने विवाह के निमत्रण पत्र उन्हे भेज चुके थे सत्येन को पारू दीदी ने कई पत्र लिखे उसे बुलाया भी लेकिन उत्तर सिफ इतना ही आता, इन दिनो रिसच का काम अधिक होने से समय नही मिल पाता

एक दिन पारू दीदी ने खुल कर कह दिया कि वह विवाह के सम्बन्ध मे एक बार सत्येन से बात करना चाहती है मम्मी के बुलाने पर सत्येन घर आया ड्राइग रूम मे सभी लोग बैठे हुए थे मम्मी सत्येन को बताती रही कि पारू ने एम० ए० कर लिया है और वह उसका विवाह करना चाहती हैं सत्येन बिना कोई रुचि दिखाए सब कुछ सुनता रहा मम्मी ने जब सत्यन को निलिप्त देखा तो उन्होंने सत्येन से, सीधे प्रश्न करना उचित समझा, ' तुम्हारा इरादा क्या है, तुम कब तक विवाह करना चाहते हो ?"

सत्येन ने कहा, "वसे तो इन दिनो रिसच मे व्यस्त हू लेकिन इरादा आपके सामने ही प्रकट करूगा " मम्मी गदगद होते हुए बोली, "मुझे तो पहले ही मालूम था कि तुम मेरी पारू को सच्चे मन से चाहते हो "

सत्येन ने मम्मी को बीच में टोकते हुए कहा, "लेकिन आप गलत

समझ रही हैं, मैंने दूसरी लडकी पसन्द की है"

सत्येन का यह निणय सुनने के लिए मम्मी तैयार नहीं थी कुछ उत्तेजित होते हुए बोली, "लेकिन कौन सी ऐसी लडकी है जो मेरी पारू से "

सत्येन का बहुत छोटा सा उत्तर था 'नेहा'

पारू झटके से उठ खडी हुई मम्मी स्तब्ध रह गईं उन्हें सत्येन की बात पर विश्वास नहीं हो रहा था

नेहा घबरा कर उठ खडी हुई बैसाखी सम्हालते हुए उसे लग रहा था कि उसे अब इन बैसाखियों की आवश्यकता नहीं रही मन के किसी कोने मे दबी सुखद अनुभूतियों ने तहलका मचा दिया था नेहा उसी मे भीगती जा रही थी, क्या सत्येन सच ही इतना विश्वसनीय निणय ले चुका है

○ ○

बिन बुलाए मेहमान का उपहास उसे बुरी तरह मर्माहत कर गया मम्मी के रोकने पर, न चाह कर भी उसे देर तक बैठना पड़ा पारू दीदी अपने मित्रो के बीच व्यस्त थी नेहा सत्येन के मन को समझ रही थी वह पत्थर के बुत की तरह चुपचाप बैठा था

कई महीने बीत गए, सत्येन पारू से मिलने नही आया और नेहा को आश्चय इस बात का था कि कालेज से लौट कर पारू दीदी रोज ही सत्येन के बारे मे पूछती नेहा का इस वष बी० ए० का अन्तिम वष था वह अपनी परीक्षा की तैयारी म लगी थी परीक्षा समाप्त हो गई थी इस बीच सत्येन एक बार नेहा के पास आया था और नेहा को पढने के लिए दी गई सभी किताबें वापस ले गया था नेहा चाहती थी कि पारू दीदी के बारे म कोई चर्चा हो पर सत्येन बहुत जल्दी चला गया था गर्मिया समाप्त हो गई थी परीक्षा फल घोषित हुआ नेहा ने प्रथम श्रेणी मे बी० ए० की परीक्षा पास की थी, नेहा के नाम सत्येन का बधाई पत्र आया था इस बीच पारू दीदी बहुत उदास रहने लगी थी उनके कई साथी जिन्हें वह अपना जीवन साथी बनाना चाहती थी, वे अपने विवाह के निमन्त्रण पत्र उन्हें भेज चुके थे सत्येन को पारू दीदी ने कई पत्र लिखे उसे बुलाया भी लेकिन उत्तर सिफ इतना ही आता, इन दिनो रिसच का काम अधिक होने से समय नही मिल पाता

एक दिन पारू दीदी ने खुल कर कह दिया कि वह विवाह के सम्बन्ध मे एक बार सत्येन से बात करना चाहती है मम्मी के बुलाने पर सत्येन घर आया ड्राइग रूम मे सभी लोग बठे हुए थे मम्मी सत्येन को बताती रही कि पारू ने एम० ए० कर लिया है और वह उसका विवाह करना चाहती हैं सत्येन बिना कोई रुचि दिखाए सब कुछ सुनता रहा मम्मी ने जब सत्यन को निर्लिप्त देखा तो उन्होंने सत्येन से, सीधे प्रश्न करना उचित समझा, "तुम्हारा इरादा क्या है, तुम कब तक विवाह करना चाहत हो ?"

सत्येन ने कहा, "वसे तो इन दिनो रिसच म व्यस्त [redacted] लेकिन इरादा आपके सामने ही प्रकट करूगा " मम्मी गदगद होते हुए बोली, "मुझे तो पहले ही मालूम था कि तुम मेरी पारू को सच्चे मन से चाहते हो '

सत्येन ने मम्मी को बीच में टोकते हुए कहा "लेकिन आप गलत

समझ रही हैं, मैंने दूसरी लडकी पसन्द की है "

सत्येन का यह निणय सुनने के लिए मम्मी तैयार नही थी कुछ उत्ते-जित होते हुए बोली, "लेकिन कौन सी ऐसी लडकी है जो मेरी पारू से "

सत्येन का बहुत छोटा सा उत्तर था 'नेहा'

पारू झटके से उठ खडी हुई मम्मी स्तब्ध रह गईं उन्हें सत्येन की बात पर विश्वास नही हो रहा था

नेहा घबरा कर उठ खडी हुई बैसाखी सम्हालते हुए उसे लग रहा था कि उसे अब इन बैसाखियो की आवश्यकता नही रही मन के किसी कोने मे दबी सुखद अनुभूतियों ने तहलका मचा दिया था नेहा उसी मे भीगती जा रही थी, क्या सत्येन सच ही इतना विश्वसनीय निणय ले चुका है

● ●

गैप

"मुझ से बार-बार आप ये क्यो पूछना चाहते हैं कि मैं कई बार आप से कह चुकी हू कि किसी भी सच्ची घटना को झूठी कहानी नही बनाया जा सकता है "

' लेकिन अगर कुछ कह लोगी तो दद "

"हल्का हो जायेगा, यही न ? वही सदियो पुराना दकियानूसी फामूला कि कहने से दद हल्का हो जायेगा मैं सिफ अपने आप मे विश्वास रखती हू अपने को समझने और जानने की ताकत मुझ मे है मैं नही चाहती कि कोई भी मेरे दुख या सुख शेयर करे "

इस बार बीरेन बाबू तिलमिला उठे, "मीरा क्या मेरा कोई भी अधिकार नही कि मैं तुमसे '

"बीरेन बाबू आप मुझ से बडे हैं मैंने बचपन से ही आपको आदर दिया है पिता और भाई से कम नहीं जाना लेकिन इसका ये मतलब तो नही कि मेरी व्यक्तिगत जिन्दगी मे आप हर वक्त

"ठीक है अगर तुम नही चाहती हो तो मैं तुमसे कुछ नहीं कहूगा दरअसल मन नही मानता है तुम्हारा दुख देखा नहीं जाता है आज अनुमन होता तो मैं तुमसे कुछ भी नही पूछता लेकिन अब तुम बिल्कुल अकेली हो गई हो ये सब कुछ मुझ को भीतर पछताने लगता है इसीलिए '

' इसलिए आप मुझ कुरेद रहे हैं आपको अनुमन के बारे मे बात करके और सा सुख मिल जाता है क्या आप इसी को ठीक मानते हैं कि अनुमन की बात करके हर समय मेरे घाव को कुरेदे ? बीरेन बाबू मैं टूट जरूर गई हू लेकिन अभी बिखरना नही चाहती मुझे मेरे खूट से ही बधा रहने दीजिये प्लीज ' और मीरा फफक कर रो उठी

बीरेन बाबू भी अपने को नही रोक सके अपनी आखें पोंछते हुए बोले,

"अरे पगली रोती है! इतनी दृढ़ता और इतना साहस सजोने के बाद इस तरह कमजोर होना क्या अच्छा लगता है! फिर इस तरह मन छोटा करेगी तो अशुमन की जिम्मेदारी कौन निभायेगा?" मीरा ने झटके से बीरेन बाबू का हाथ अपने सिर से हटा दिया।

"बस कीजिये बीरेन बाबू, मैं अपनी जिम्मेदारियो को अच्छी तरह समझती हू उसे निभा लेने की मुझमे ताकत है क्या कमी आप मुझमे देख रहे हैं"

और बीरेन बाबू सच मे ही देख रहे थे कि वो कौन सी कमी है—वो कैसा गैप है जहा मीरा सुख और दुख की सहज अनुभूति को स्वीकार नही कर पाती उसकी अपनी भावनाए रहस्यमय हो उठती हैं ये तो निश्चित है कि मीरा एक सख्त चट्टान बनना चाह रही है पर मीरा इसे भी नही भुला सकी है कि उस सख्त चट्टान के नीचे कुछ तरल सा रिसता रहता है, जिस खूट से वो बधकर अपनी जिन्दगी के लिए छाव ढूढ रही है वहा भी बहुत सी दूरबीनी निगाह, मीरा को समूचा निगल लेने के लिए उग आई हैं मीरा आहत है, हर ओर से आहत आखिर लोग उसे क्यों नही जीने देना चाहते है, अशुमन उसका था अपने और अशुमन के सम्बन्धों को विज्ञापित करके वो अशुमन का महत्त्वहीन नही बनाना चाहती है फिर मीरा की अपनी पीडा है मन की गहरी जडो मे समाया पश्चाताप है जिसकी अग्नि को धधका कर वो स्वय जलना चाहती है कोई सहानुभूति, कोई दया का छीटा उसे स्वीकार नही यही अब उसका व्रत है यही तपस्या है

पर बीरेन बाबू ही केवल ऐसे हैं जो मीरा को आरोप लाछना और अपमान से ऊपर उठा हुआ पाते हैं वे केवल इतना ही चाहते हैं कि मीरा अपने दुखो को सहज स्वीकृति दे दे जो समाज मे स्वीकृत हो स्वय ही उसने अपने चारो ओर एक ज्वाला धधका रखी है जबकि किसी शीतल छाव के लिए उसका मन भटक रहा है तो क्या बीरेन बाबू ये जानते थे कि अशुमन की मत्यु के बाद मीरा किसी और की हो जाना चाहती है या कि फिर उसका एकदम से अपने सगे सम्बन्धियो नाते रिश्तेदारो से अलग हो जाना उसकी अपनी स्वतन्त्रता को बनाये रखना था मीरा अशुमन को जी जान से प्यार करती थी अशुमन भी मीरा को

बहुत प्यार करता था पर अक्सर ऐसा होता अशुमन और मीरा जीवन के एक मोड पर अकेले हो उठते अशुमन आहत होकर अपने ही अपराध बोध से निरीह हो उठता और मीरा का दप उस चूर चूर कर डालता ऐसी ही मानसिक असतुलित स्थितिया उभरती लेकिन गहस्थी की डोर थामे वे फिर एक-दूसरे के करीब हो उठते पर तब भी बीरेन बाबू ने महसूस किया था कि अशुमन और मीरा के बीच एक गैप है इस गैप के लिए वे मीरा को ही दोषी पाते मीरा की तार्किक मनोवृत्ति, बुद्धि से आपसी सम्बन्ध को जीना चाहती है जबकि आत्मीय सम्बन्धो के लिए प्यार और विश्वास की अधिक आवश्यकता होती है।

पर मीरा को बीरेन बाबू बचपन से जानते हैं क्यों और कस की विश्लेषणात्मक प्रवत्ति उसे किसी भी स्वीकार से खीचती रही है परम्परा वादी विचारधारा को उसने सदा अवहेलना की पुरुषवादी समाज के अन्याय और अत्याचार की अक्सर जब वो चर्चा करती तो बीरेन बाबू अपनी पत्नी से हसते हुए कहते

"इदु तुम इस लडकी के पास मत उठा बैठा करो इसका क्या कल को ये तुम्हारे हाथ मे भी नारी आन्दोलन का झडा पकडा देगी मेरी एक-मात्र पत्नी छिन जायेगी और मेरा बेडा गक हो जायेगा" और बीरेन बाबू की पत्नी कहती "देखते रहिये यही मीरा कसे बदलेगी फिर दुनिया भर की पुरुष जाति उसे सिफ इसलिए बुरी नही लगेगी क्योकि उसका पति भी पुरुष होगा।"

और सच मे ही अशुमन से विवाह होते ही मीरा बदल गई थी विवाह के बाद पहली बार जब मीरा घर आई तो बहुत गुम-सुम थी मीरा की मा घबराई हुई बीरेन बाबू के पास आई और बीरेन बाबू से बोली, "भइया मीरा को जाने क्या हो गया बहुत चुप रहने लगी है तुम्ही पता करो ससुराल मे कोई दुख तो नही है "

इधर ससुराल से आये मीरा को आठ दिन भी नही हुए थे और अशुमन की दस चिट्ठिया आ गई थी नौवे दिन अशुमन मीरा को लेने आ पहुचा अशुमन की बात और व्यवहार से किसी को भी रचमात्र बात का आभास नही मिला कि मीरा का अशुमन से कोई दुख होगा अशुमन का मीरा के

प्रति प्यार किसी दीवाने प्रेमी जैसा था परिवार के बीच मीरा को रहना नही था कि सास-ससुर या ननद-देवर की आलोचना या अत्याचार का शिकार होना पडे अशुमन शराब और सिगरेट, यहा तक कि पान भी नही खाता अच्छा कमाता था, हर तरह की सुख और समृद्धि थी

पर ऐसा जरूर होता कि आपसी बातचीत के दौरान एक ऐसा मोड आता जहा पति-पत्नी के आपसी सम्बन्धो मे एक गैप आ जाता अशुमन किसी अपराध बोध से कायल होकर निरीह हो उठता और मीरा अपने ही दप से चूर होकर असहज हो उठती वो गैप क्या था इसे बहुत चाह कर भी बीरेन बाबू नही जान सके तब भी मीरा ने यही कहा था मैं सिर्फ अपने आप मे विश्वास रखती हू अपने सुख-दुख को समझने की ताकत मुझ मे है मैं नही चाहती कि मेरे व्यक्तिगत मामले मे कोई शेयर करे "

और आज अशुमन की मृत्यु के बाद भी मीरा यही चाहती है अशुमन की मृत्यु पर सबने ये चाहा कि मीरा फूट फूट कर रोये, पत्थर से सिर फोड ले लेकिन मीरा किसी पुरानी चट्टान की तरह सख्त बनी रही अपने प्रिय की मृत्यु आदमी को पागल बना जाती है आदमी टूट जाता है जीवन की सारी आस्थाए बिखर जाती हैं पर अशुमन की मृत्यु ने मीरा को जड बना दिया ऐसा क्यो ? मीरा कहती है कि वो टूट गई है बिखरना नही चाहती न बिखरने के पीछे आखिर वे कौन सी आस्थाए हैं जिन्हे लेकर मीरा सख्त चट्टान हो गई है

बीरेन बाबू मीरा को पहेली मानने को तैयार नही हैं वे उसे बार-बार कुरेदना चाहते हैं पर मीरा बीरेन बाबू की इन अधिकार पूर्ण चेष्टाओ पर ऐसी मुहर लगा देती है कि बीरेन बाबू तिलमिला उठते हैं ये तो सच है कि बीरेन बाबू का मीरा से कोई सम्बन्ध नही है उनका अपना परिवार है, अपनी जिम्मेदारिया हैं उसे न भी पूछे तो उनका क्या बनता बिगडता है पर पता नही क्यो मीरा अपनी सी लगती है, इसीलिए उसके दुख को शेयर कर लेना चाहते हैं

एक दिन मीरा बीरेन बाबू के घर आई और कुछ मुडे हुए कागजो को बीरेन बाबू को थमाती हुई बोली "निराशा और दुख से भरी हुई ये कुछ कविताए हैं ' और डायरी के पन्ने लेकर बीरेन बाबू उत्सुकता से

बोले—"किसकी हैं ?

'अंशुमन की हैं उसकी डायरी और फाइलों में मिली हैं"

"अंशुमन कविता करता था तुमने कभी जिक्र नहीं किया"

"दुखी मन कवि होता है बीरेन बाबू लेकिन अपने दुखों को कह देने का ये माध्यम भी कितना सुखद होता है" और बीरेन बाबू कुछ कहें इससे पहले ही मीरा खटखट करती सीढ़ियां उतर गई बीरेन बाबू ने डायरी के पन्ने उलटे पूरी डायरी खाली थी आरंभ के कुछ पृष्ठों में निराश दुखी मन की अनुभूतियां थी कहीं कहीं अपराध बोध से छटपटाते मन की अभिव्यक्ति बीरेन बाबू समझ नहीं पा रहे हैं कि अंशुमन क्यों इतना दुखी था क्या मीरा ही उसके दुख और निराशा का कारण थी ?

इसी बीच बीरेन बाबू का ट्रांसफर हो गया कानपुर लखनऊ मेरठ और अब रिटायर होकर वे फिर अपने पुश्तैनी मकान में बनारस आ गये थे मीरा के बारे में उन्हें बराबर समाचार मिलता रहा लेकिन आठ वर्ष के अंतराल के बाद जब वे मीरा से मिले तो वे उसे पहचान नहीं सके जिंदगी की आंधियों ने उसे उम्र से पहले ही बुढ़ापे की देहलीज पर पटक दिया था बीरेन बाबू देख रहे थे मीरा को उसके चेहरे पर उसी दंभ को खोज लेना चाह रहे थे जो अंशुमन की मृत्यु के बाद बना हुआ था—उन्हें याद आया कितने आत्म विश्वास से मीरा ने कहा था—मैं टूट चुकी हूं लेकिन बिखरना नहीं चाहती

लेकिन समय ने मीरा को हर ओर बिखेर कर उसके अस्तित्व को मिटा देने में कोई कसर नहीं छोड़ी

बनारस आते ही बीरेन बाबू बहुत व्यस्त हो गये घर गृहस्थी के बहुत से झमेले उन्हें निपटाने थे आने वाली सर्दियों में बेटी का विवाह भी था पत्नी के कई बार कहने पर भी वे मीरा के घर नहीं जा सके एक दिन मीरा का बेटा उन्हें बुलाने आया मीरा कई दिन से बीमार थी बीरेन बाबू मीरा को देखते रह गये थे चार दिन की बीमारी में मीरा बिल्कुल हड्डी का ढांचा रह गई थी आंखों के गड्ढों में विचित्र-सा सूनापन छा गया था बीरेन बाबू ने उसका सिर सहलाते हुए कहा, इतनी हालत बिगड़ गई है, पहले क्यों नहीं खबर दी ? ' एक लम्बी सांस खींचते हुए मीरा बोली— हालत

तो ऐसी ही बनी रहे तो ठीक है बीरेन बाबू, आप से बहुत कुछ कहना चाहती थी एक बार अपने आप को साफ कर लेना चाहती हू जिसे आपने कई बार जानने की कोशिश की उसे आज मैं बिना किसी दुराव छिपाव के आपसे कह लेना चाहती हू मैंने हमेशा आप से प्यार भरा सम्बल पाया है आज उसी के सहारे टिक जाना चाहती हू

"अशुमन को जब मैंने पहली बार देखा था तभी से मैं उसकी हो गई इतना प्यार मैंने अपनी जिन्दगी मे किसी से भी नही किया, अपने बच्चो से भी नही अशुमन को देखते ही न जाने कितने इन्द्रधनुषी सपने मेरे मन पर छा गये लेकिन मेरे सपने पहली रात ही बिखर गये जब अशुमन ने बहुत ईमानदार होकर अपनी बात साफ कर ली थी कि वो प्यार किसी और से करता था लेकिन उससे उसका विवाह नही हो सका अशुमन ने अपनी बात कह ली और वो मुझ पर पूरी तरह से आश्रित हो गया था मुझे बेहद प्यार करता लेकिन मैं उसे माफ नही कर सकी मैं इस कल्पना से ही अपना सतुलन खो बठती कि मेरे जीवन का प्रथम और अन्तिम पुरुष किसी और को भी अपनी बाहो मे बाध चुका है अशुमन ने हर तरह से अपनी हार मेरे सामने स्वीकार की होगी लेकिन मन से हर तरह से अशुमन को स्वीकार करने के बाद भी मैं प्रगट रूप से कुछ न कह सकी और मेरे इस कुछ न कह सकने का जहर हम दोनों के बीच एक गैप बनाता रहा मैं अपने अहम से अपने को मिटाती रही पर मैं खुद मिट जाऊगी, मेरी समूची जिंदगी एक गैप हो जायेगी, मैं नही जानती थी बीरेन बाबू ये मुझे नही मालूम था" और मीरा फफक फफक कर रो उठी बीरेन बाबू की आखें नम हो आइ मीरा को पुचकारते हुए बोले, 'अब तो सब कुछ बीत गया, अपने को दुखाने से भला क्या मिलेगा "

"नहीं बीरेन बाबू, आज मुझे टोकिए नही, मैं सब कुछ कहना चाहती हू अशुमन की मत्यु के बाद मैंने अपने को हर ओर से सिर्फ इसलिए कैद कर लिया कि मैं प्रायश्चित की अग्नि मे तप सकू मैं नही चाहती कि कोई भी सहानुभूति या दया मुझे शीतल छींटा दे मैंने अशुमन को बहुत सताया अशुमन मौन होकर सब सहता रहा मैं भी मौन होकर अपने पापो की सजा भोगना चाहती हू मैं हर ओर से प्रताडित होना चाहती थी, सिर्फ इसलिए

कि अपने और अशुमन के बीच का गैप मिटा सकू बीरेन बाबू आप बोलते क्यो नही ? क्या मेरा प्रायश्चित उस गैप को अभी भी नही मिटा सका है मुझे आप बताते क्यो नही है" और बीरेन बाबू देख रहे थे मीरा बुरी तरह अपना सिर दीवाल मे पटक रही थी जो पत्थर अशुमन की चिता देखकर नही पिघला था, आज चटक चटक कर फट रहा था प्रायश्चित की अग्नि मे तपती मीरा निश्चय ही अपने को शेष कर चुकी थी, लेकिन उसके और अशुमन के बीच का गैप क्या और बढ नही गया था ?

० ०

तैरते बत्तख

आज फिर उसे यही लग रहा है—कि कमरे मे घिरती शाम की यह मनहूसी बेवक्त आई है। पता नही क्यो इस मनहूसी के साथ उसके दिमाग की नसें एकदम से तन जाती हैं—और उनमे बिलबिलाते हुए कीड़े रेंगने लगते हैं। नसो के लाल रग मे बिना हाथ पैर वाले गोल मूह और पतली पूछ वाले ये घिनौने कीड़े उसे बहुत बुरे लगते हैं उसे मितली-सी आने लगती है पर कीडो की रफ्तार कितनी तेज है इस तेज रफ्तार से कुछ सीखा भी तो जा सकता है उसकी जिन्दगी मे कितना ढीलापन आ गया है, सब कुछ बधा हुआ, रुका हुआ बालकनी मे खड़ी बड़ी देर से एक ही ओर देखते हुए वह थक सी गई एक बार फिर उसने नसो मे रेंगने वाले कीडो की रफ्तार को ज्यो का त्यो पाया सामने वाले घर की दीवार पर पास लगे पेड की परछाइ खूब बडी होकर मकान पर चढ़ आई थी अक्सर शाम को उस घर मे ताला लटका होता है नौ बजे रात के बाद स्कूटर आता है पति पत्नी और नन्हें दो बच्चे शाम को ताजी हवा लेकर घर वापस आते हैं बच्चे थोडी देर मे खाना खाकर सो जाते हैं पति-पत्नी के कहकहो की आवाज रोज दस साढे दस तक सुनाई देती रहती है उसे इस बात का पूरा यकीन है कि सामने वाला पेड उस घर पर शाम की मनहूसी उतरने नही देता है गले मे बडी देर से महसूस होने वाला अटकाव नीचे उतर जाता है दिमाग की खिंची हुई नसें अपने आप ढीली पड जाती हैं उनमे रेंगने वाले कीड़े जैसे किसी एंटीसेप्टिक के स्पर्श से निश्चेष्ट हो जाते हैं

पारुल और ऋभु नीचे से खेल कर आ गये हैं दोनो ही खाने के लिये अच्छी चीज की माग कर रहे हैं उसका आंचल पकड-पकड कर खीच रहे हैं "मम्मी अच्छी चीज खायेंगे" वह सोच रही है कि अच्छी कौन सी चीज

खाने को दे उसे गुस्सा भी आता है, ये बच्चे हर समय उसका आंचल क्या खींचते हैं जैसे उसका अस्तित्व ही खींच लेना चाहते हैं बच्चे चीखे चले जा रहे हैं नितिन अपने कमरे से चिल्लाते हैं "अरे, मीना कुछ रखा हो तो दे दो न ?" नितिन की सिफारिश सुनते ही वह सिर से पैर तक जल उठती है— 'रखा है तो दे दो, न जाने कौन सी मेवा मिठाई ला कर रखी है जो दे दूं" झुंझलाहट और उदासी की स्याह लकीरें दीवारों पर चढ़ने लगती हैं उसके मुंह से 'मिठाई' शब्द सुनकर ऋषभ मिठाई के लिए मचलने लगता है पारुल मां का गुस्सा देख सहम जाती है लेकिन ऋषभ बराबर मिठाई के लिये जिद किये जा रहा है वह रसोई घर से एक कटोरी में सब्जी और तश्तरी में रोटी लाकर ऋषभ के आगे रख देती है ऋषभ सब्जी का कटोरा उलटा देता है तड़ाक से एक चपत ऋषभ के गाल पर पड़ता है वह जोर से चीखती है—' निकल जा यहां से " पारुल रोते हुए ऋषभ का हाथ पकड़ लेती है, और उसे खींचते हुए कहती है "चल ऋषभ हम पापा से कहेंगे "

नितिन के व्यवहार से उसे बुरी तरह खीझ हो रही है—हर समय अपने में लीन या फिर बच्चों की वकालत वह तो जैसे कुछ है ही नहीं कभी लड़ो झगड़ो तो ऐसा फुसलाएंगे कि बस वह ही बुद्धू रह गई है कल्पना के ढेर के ढेर सपने मेरे सामने बिखेर देंगे या फिर "क्या करूं मीनू, सुबह से शाम तुम्हीं सबके लिये तो एक करता हूं—पैसा नहीं है वरना तुझ क्या से क्या "

ऋषभ रोते रोते नितिन से चिपक कर सो गया है—नितिन उसे लेकर टहल रहे हैं उसके अन्दर का बहुत बड़ा सा फफोला फट जाने को होता है पता नहीं क्यों कभी-कभी वह बहुत क्रूर हो उठती है छोटे छोटे घेरों में केवल उसी का स्वार्थ क्यों मंडराता है कभी भी नितिन की जरूरतों के लिए नहीं सोच पाती है जिस वर्ष हमारी शादी हुई थी नितिन कितना हंसते थे, कितना बच्चों जैसा उसे छेड़ा करते थे पर अब कितने गम्भीर हो गये हैं कभी खुल कर हंसते नहीं हैं उसने देखा नितिन ऋषभ को सुलाकर अपने कमरे में जा रहे थे उसे लगा नितिन के कंधे दिन पर दिन झुकते जा रहे हैं वह एकदम से परेशान हो गई, जैसे अन्दर के ढेर से फफोले एक

सग ही फूट जायेंगे

पात्र वर्ष ढेरो समस्याओ सहित जीवन पर लद आये थे अब उसके और नितिन के बीच केवल कुछ औपचारिक बातें ही रह गई हैं घर का बजट कैसे सतुलित हो, या फिर उसे घर का सभी काम करना पडता है और अगले महीने से महरिन जरूर लगा लेंगे इन्ही सवेदनात्मक स दर्भों के बीच नितिन एक आशा की डोर उसके हाथ मे थमा देता है कि कुछ ही महीना मे उसका प्रमोशन होने वाला है तब नितिन उसकी चिबुक उठा कर प्यार से कहता है—प्रमोशन हो जाने पर तो अपनी मीना को महारानी बना दूगा " नितिन की इस बात से अब उसकी आखो मे अजीब सा सुख तरने लगता है नितिन की बडी-बडी आखों में भी उस तैरते सुख की पूरी स्वीकृति होती है आखो मे तरने वाला सुख उसे बहुत अच्छा लगता है बचपन मे तालाब मे तरते हुए बत्तख उसे बहुत अच्छे लगते थे ये तैरता हुआ सब सुख भी उसे कुछ-कुछ वैसा ही लगता है इस तैरते हुए सुख के लिये वह अपने हृदय मे एक टेपरिकार्डर फिट कर लेती है, और जब तब नितिन की आवाज को प्लेबक करके देर तक आखा मे उस सुख को तैरने देती है

सभी तो कहते हैं कि नितिन बहुत परिश्रमी है लगन के बहुत पक्के हैं अभी क्या, अभी तो जीवन की शुरुआत है, आगे तो नितिन के जीवन म बहुत अच्छे दिन आने वाले हैं उसकी आखो म तैरने वाले सुख की रफ्तार तेज हो जाती है तरता हुआ सुख बडे अच्छे अच्छे चित्र बनाने लगता है छोटा सा फूलो की क्यारियो से सजा बगला, पोच मे खडी गाडी, वह सु दर सा मेकअप किये भारी साडी पहने निकलती है नितिन गाडी का दरवाजा खोलकर उसे अपने पास बैठाते हैं पारुल और ऋभु पीछे की सीटो पर बैठ मस्ती कर रहे हैं तेज रफ्तार से गाडी आगे बढती जाती है, खिलखिलाहटो का स्वर हवा मे चारो ओर गूजने लगता है

कभी-कभी उसके मस्तिष्क मे दो चीजें बहुत समान भाव से आती हैं तब उसे लगता है कि उसके मस्तिष्क के अ दर कोई कुशल बनिया बठा है और बडे हिसाब से नाप जोख कर रहा है अपने बारे म उसे इतना सोचना पडता है कि तरह-तरह के ऊटपटाग प्रतीको का निर्माण उसने अपने आप

ही कर लिया है, जैसे नसो म रेंगने वाले बिना हाथ पर के गोल मूड और पतली पूछ वाले कीडे, बत्तख जैसा तैरता सुख, या फिर मस्तिष्क का कुगल बनिया उसने इस बात को बहुत गहराई से सोचा है कि शाम को उसके मस्तिष्क का बनिया उसे इस बात के लिये समेत किये रहता है, कि उसका अस्तित्व बहुत सिमटा हुआ है एक तरह से कई भागो में बट गया है तब फौरन उसके दिमाग की नसो मे लाल खून के सग बिना हाथ पैर तथा गोल मूड वाले कीडे तेज रफ्तार से घूमने लगते हैं फिर जैसे ही तसल्ली देने वाला एटीसेप्टिक छूता है, कीडे अपनी शक्ति खोने लगते हैं सूत की सफेद बत्तखें तरने लगती हैं और उसे नितिन की एक ही बात याद आती है "मीना दिमागी स्तर पर प्यार नही टिकता है उसके लिये तो अन्तमन का द्वार खुला होना चाहिए"

आज पूरे चालीस दिन हो गये, अस्पताल के जनरल वार्ड मे वो बीस नम्बर की पलग की रोगिणी है नितिन रोज पारुल और ऋचा को लेकर उसके पास आते हैं फिर जब नितिन बच्चो को लेकर वापस जाते हैं तो वह देर तक नितिन को बच्चो के सग जाता हुआ देखती है आखों के आसू थमना नही चाहते हैं, इस बीच नितिन कसे हो गये हैं बच्चे कितने कमजोर हो गये हैं घर जाकर वह बच्चो का पूरा ख्याल करेगी बच्चो को कभी नही मारेगी भला कसी मा हू, इतने प्यारे कोमल बच्चो को कोई मारता है अन्दर के ढेरो फफोले फूट जाते हैं और वह देर तक रोती रहती है आज उसे घर की बहुत याद आ रही है सारे घर मे विष भरा उसका अस्तित्व छाता जा रहा है दो मासूम बच्चे, चिन्ताओ के बोझ से लदे हुए नितिन, उसका जी चाहता है कि आज इतना रोये कि मन का सारा मल धुल जाये

आज डॉक्टर सुबह से उसे ग्लूकोज चढ़ाने को कह गये हैं मीना को बूद-बूद हो कर नसो मे रिसन वाली ग्लूकोज की बूद वैसी ही लग रही है जसे गोल मूड और लम्बी पूछ वाले कीडे, लाल रक्त मे तेज रफ्तार से दौड रहे हो दूसरी ओर तैरते हुए सुख वाली सफेद बत्तख, जो उसी की हैं लेकिन किसी और की आंखो म तर रही हैं मीना अपने से अजनबी बनी सब देख रही है नितिन लाल साडी में लिपटी नववधू का गोरा मुखडा

उठा रहे हैं और उससे कह रहे हैं—"तुम्हें महारानी बना कर रखूगा" लाल साडी का गोरा मुखडा शरमा कर नितिन के सीने मे अपना मुख छिपा लेता है

पारुल और ऋभु मीना का पल्ला खीच रहे हैं मीना चाहती है कि अपने को हर ओर से समेट कर अपने बच्चो को अपने आचल मे छिपा ले पर उसकी नसो मे रेंगने वाले गोल मूड और लम्बी पूछ वाले कीडे उसे बुरी तरह जकड लेते हैं नसों मे फैल कर वे मीना को बडे चाव से चूस रहे हैं मीना के मस्तिष्क का बनिया किसी अच्छे दाम पर उसके तैरने वाले सुख के बत्तखो को बेच आया है

० ०

अमलतास नहीं फूला

इस बार भी अमलतास के पेड मे फूल नही आये तमाम पत्तियो के झडने के बाद कलियो के गुच्छे जरूर लटक आये हैं लेकिन चिटकी हुई कलिया जमीन पर गिर जाती हैं पेड फूलो से नही लद पा रहा है इस पेड का भी विचित्र हिसाब है एक तो पत्तियो के झड जाने के बाद कलिया आती हैं, फिर बिना पत्तियों के फूलो से भर उठता है लेकिन पिछली बार की तरह इस बार भी सिर्फ कलियो के गुच्छो मे से एक एक कली चिटक चिटककर गिर रही है, और गली के बच्चे, उन कलियो को नोच-नोच कर उनसे हाथी बना रहे हैं तनु अक्सर इस पेड को देखती है—करे भी क्या, पेड बिलकुल खिडकी के सामने जो है यो सोचने, समझने सुलझाने के लिए उसके पास कुछ कम समस्याए नही हैं लेकिन फिर भी कोई बेतुकापन अनचाहे सोचने की प्रक्रिया के साथ पेवअप हो जाता है और मजा तो यह है कि इस बेतुकेपन से तनु स्वय ही नही शोभित को भी ग्रसित होने के लिए मजबूर करती है उस दिन भी कुछ ऐसा ही हुआ

"तुम नाश्ता नही कर रही हो" शोभित ने पत्रिका के पन्ने पलटते हुए कहा

देख रही हू इस पेड मे इस बार फिर फूल नही खिलेंगे कलिया चिटक चिटक कर नीचे ही गिरती जा रही है—पता नही ऐसा क्यो होता है ?'

ओ पप तुम भी विचित्र हो शोभित कुछ खीझ उठा इतना पढ़-लिखने के बाद भी सालिड थिंकिंग के नाम पर तुम जीरो हो "

'मैं क्या हू, यह मैं तुमसे नही जानना चाह रही हू

तनु ने भी उतने ही रूखेपन से कहा शोभित ने कुछ सहजता लाने की कोशिश में कहा,

"छोटी छोटी बातो का बुरा मान जाती हो, आज छुट्टी का दिन है, और तुम्हारी यह निगेटिव थिंकिंग सारा दिन बेकार करने का मूड है क्या अरे पगली हमे पेड से क्या मतलब कौन सा हमे उन फूलो से सब्जी बनानी है या घर सजाना है "

"वह बात नही है, तुम्हारी कुछ आदत ही पडती जा रही है मुझे टालने की "

'तनु, तुम तो बिना मतलब बात बढा रही हो " और शोभित पत्रिका के पन्ने पलटने लगा तनु भी बिना नाश्ता किए ही उठ गई

ऐसा अक्सर होता है अम्मा जी उसे जब-तब डाट देती हैं उसका मूड ऑफ हो जाता है लेकिन शोभित पर उसका कोई असर नही होता यही कह कर टाल देता है "अरे यार चलता है, हर घर मे यही सब कुछ होता है तुम हर बात को इतनी गभीरता से मत लिया करो " लेकिन तनु ने शोभित की बात को और अधिक गम्भीरता से लिया और अपने और शोभित के बीच उसने तीन और छ की खाई को पनपते पाया अपनी जिंदगी को सिर्फ घसीटते हुए पाया है ऐसी उदास और निराश स्थितियो म उसे प्राय ही दिखने वाला वह सपना याद आया है जब परीक्षा भवन मे घबराई हुई अकेली वह बैठी है उसे किसी भी प्रश्न का उत्तर नही याद आ रहा है पर यह सपना सच नही है तनु जिन्दगी के हर प्रश्न का उत्तर देने मे पूरी तरह सक्षम है अपने अन्तद्वन्द्व से भले ही हार कर वह इस तरह के सपने देखे, लेकिन सामने आई स्थितियो की जागरूकता को उसने हमेशा गहराई से पहचाना है वह बात और है कि उसकी अपनी सगी बहन जया अधिक सुखी और सम्पन्न है अब भी वह अपने पति के सग आती है लगता है किस्मत की लॉटरी जया के नाम ही खुल गई है तनु ने जया का मजाक बनाया है—"पढी लिखी मूख है आज यह व्रत, कल वह त्यौहार पर ी समय की जागरूकता को पकडने की कोशिश नही की महारानी जी गीता पढेंगी रामायण पढेंगी पर घर मे रोज आने वाला समाचारपत्र रद्दी के लिए इकट्ठा करेंगी सब ढकोसला है परम्परा को अपने से चिपटाए रहो, सिर्फ इसलिए कि अन्दर का व्यक्ति जागने न पाये "

"हा, यह तो तुम ठीक कह रही हो पर तनु, सुख खोजने से नही मिल पाता है "

"सुख मान लेने से ही सुख की अनुभूति होने लगती है अब इस पेड को ही ले लो कलियो के तमाम गुच्छों के लटकने के बाद भी पेड फूलो से नही लद पा रहा है क्यो ? कारण जान पाना आसान है क्या ? हमने यह मान ही तो लिया है कि इस बार भी इस पेड मे फूल नही आयेंगे ' शोभित के इस तरह प्यार से समझाने पर तनु को कई-कई बार कमविस होना ही पडा है उसे वह सपना भी याद आया है, जिसे कई बार उसन देखा है परीक्षा भवन मे अकेली तनु है जिसे प्रश्नपत्र का कोई उत्तर नही आ रहा है जो भी हो, तनु ने क्यो और कैसे की विश्लेषणात्मक स्थितियो मे अपने विचारों को सदा ईमानदार पाया है उसे पूरा विश्वास है कि जिन्दगी को आज नही तो कल वह अपनी तरह बना ही लेगी

तनु के पडोस मे श्रीमती कश्यप रहती हैं श्रीमती कश्यप बहुत सुलझी और अनुभवी महिला हैं उनका अपना ही मत है कि उन्होंने जिन्दगी के जितने भी फार्मूले तैयार किये हैं ठीक उन्ही फार्मूलो पर उनकी जिन्दगी दौड रही है तनु अक्सर श्रीमती कश्यप के पास बठती है और जब तब अपनी समस्याओं को भी उनके सामने रखती है पर श्रीमती कश्यप ने तनु की बात को बहुत गम्भीर होकर सुनने के बजाय यही कहा—"तनु, विवाह की पहली शत ही आपसी समझौता है "जबकि तनु ने इस समझौते शब्द को ही बहुत लिजलिजा पाया है और घटो मिसेज कश्यप से बहस भी की तनु हारना नही चाहती अपने विचारों की जागरूकता पर उसे अटल विश्वास है फिर मिसेज कश्यप स्वय पढी लिखी महिला हैं बौद्धिक अभि-रुचि है, आखिर उनकी समझ मे यह क्यो नही आता कि बदलते जीवन मूल्यों के साथ नारी जीवन को भी बधी हुई परम्पराओं और रूढिग्रस्त मान्यताओं से मुक्त होना ही चाहिए कब तक वह बधे-बधाये दायरो मे घुटता रहेगा क्या उसका मूल्याकन कभी नही हो सकेगा ?

श्रीमती कश्यप ने उत्तेजित होती हुई तनु को शात करने के प्रयास मे, अपने सफेद बालों पर हाथ फेरते हुए सिर्फ यही कहा है, "तनु, तुम्हारी बात सिद्धांत हो सकती है, कोई लेख या किताब हो सकती है लेकिन चली आई

मान्यताओ का रूप नही ले सकती है ”

तनु खीज उठती है—“मैं नही समझ पा रही हू कि, मिसेज कश्यप आप कहना क्या चाहती हैं क्या चले आये समाज की परम्पराओ, मान्यताओ और रूढिगत आस्थाओ पर परिवर्तन का कोई नियम नही लागू होता ? फिर एक वर्ग विशेष अपनी सुविधा से अपने लिए मनचाहा समाज भी बना लेता है, सुविधा भी जुटा लेता है—लेकिन जो दब गया उसे उभरने का मौका ही नही मिल पाता ”

श्रीमती कश्यप अच्छी तरह समझ रही थी कि आज तनु हारने वाली नही है फिर वह यह भी जानती हैं कि तनु तार्किक भले ही हो, समझौते को लिजलिजा कह कर भी उसने उसे अपनाया है श्रीमती कश्यप ने बात बदल दी और बहुत सहज हो कर पूछा—“क्यों, तनु, तुमने शोभित के प्रमोशन के लिए बुधवार का व्रत आरम्भ किया था अब तो प्रमोशन हो गया उद्यापन कर डालो क्यो अपने शरीर को सुखा रही हो कुछ मिठाई विठाई चढाओगी तो हम लोगो का भी भला होगा ”

तनु को समझते देर न लगी कि इस अप्रासगिक बात से श्रीमती कश्यप ने उसे चोट दी है, हराने का प्रयास किया है क्योकि नारी मुक्ति आदोलन का नारा बुलन्द करने वाली तनु स्वय भी कब पारम्परिक सस्कार बधनों से मुक्त हो पाई है जिन्दगी के सघर्षों का भय जब तब उसे इन जड आस्थाओ से बांध जाता है उन दिनो शोभित बहुत परेशान था उससे जूनियर लोगो का प्रमोशन हो गया था तभी तनु ने भी निश्चय किया था कि जब तक शोभित का प्रमोशन नही होगा वह भी बुध का व्रत किया करेगी श्रीमती कश्यप ने बताया था कि बुध का व्रत गणेश जी के लिए किया जाता है और गणेश जी सब की मनोकामना पूरी करते हैं

तनु विवश है—दो विचार धाराओ के अन्तर्द्वन्द्व मे वह दोनो को ही विजयी पाती है एक विचारधारा उसके अपने ही सस्कारों की है, जहा मा, दादी, भाभी, सब उसके साथ रहती हैं दूसरी विचारधारा उसके अपने पहचान की है, जिसके लिए क्यो और कैसे की विश्लेषणात्मक स्थितियो मे उसने अपने विचारो को सदा ईमानदार पाया है और आज नही तो कल वह अपनी पहचान बना सकेगी अपने अनुकूल वातावरण बना सकेगी

इसका उसे पूरा विश्वास है तभी वह अपने तर्कों को कभी मात नहीं खाने देती है जया का सुख इसलिए उसे बहुत छिछला और सतही लगता है—जबकि अपने सुखों के लिए वह एक शांति चाहती है

श्रीमती कश्यप की एक ही छोटी बेटी है जो अपने ससुराल म काफी सम्पन्न है, मां के घर से उसे काफी कुछ मिला है ससुराल में उसका बहुत आदर और सम्मान है मिसेज कश्यप यह कहते नहीं थकती हैं कि उनकी बिटिया ने अपने घर को स्वर्ग बना दिया है यही कारण है कि ससुराल म सभी बड़े छोटे उसका आदर करते हैं पति तो उसे बहुत चाहता है इतनी बार मिसेज कश्यप की बेटी की प्रशंसा सुन-सुन कर तनु का जी जलने लगता है, उसे यही लगता है कि मिसेज कश्यप उसे नीचा दिखाने के लिए ही अपनी बेटी की इतनी प्रशंसा करती है पता चलेगा तब जब बेटे का ब्याह करेंगी और बहू घर लायेंगी तब सारा आदर्श मिट्टी मे मिल जायेगा और यही मिसेज कश्यप जो विवाह की पहली शर्त समझौते का नारा लगाते नहीं थकती हैं, किसी खूसट बुढ़िया सास का रोल निभाने लगेंगी ऊंट जब तक पहाड़ के नीचे नहीं आता अपने को सबसे ऊंचा समझता है

आज शोभित के आफिस जाने से पहले तनु ने उससे कुछ रुपये चाहे थे, और शोभित चिढ़ गया—वह कितनी बार तनु को समझा चुका है कि आखिर उसकी भी कुछ सीमाएं हैं फिर महीने के आखिर मे पैसा आयेगा कहां से ? इस महीने वैसे भी बड़े बेटे की परीक्षा फीस देनी पड़ी है मां बीमार है, उनकी पूरी दवा नहीं आ सकी है शोभित को यही आश्चर्य होता है कि तनु क्यो नहीं समझ सकी है कि यह घर उसका है—यहां का सुख-दुख भी उसका है तनु ने भी इससे अलग नहीं समझना चाहा है लेकिन शोभित के समझाने पर वह तार्किक हो उठी है और शोभित को ताना मारा है— "मैं भी नौकरी करना चाहती हूं, आखिर कब तक छोटी छोटी इच्छा को दफन करती रहूंगी" तनु की यह बात शोभित को किसी विषदंश से कम नहीं लगी लेकिन उसने हर बार विष का घूट पिया है और तनु को प्यार किया है—क्योकि शोभित जानता है तनु जो कहती है उससे अलग भी एक तनु है

तनु पिछले आठ महीने से पूरी तरह से टूट चुकी है आस्थाओं की

गहरी चोट ने उसे एक विरक्ति दी है, जीवन को विचित्र शून्यताओ से भर दिया है अब वह घटो मिसेज कश्यप से बहस नही कर पाती है शोभित से अपने अधिकारो के लिए झगड नही पाती है मन मे उसके विचित्र सा खोखलापन समाता जा रहा है जीवन के सभी चटक रग धुल पुछ गये हैं तनु के भाई के आकस्मिक निधन से, उसने अपने अस्तित्व के बारे मे भी सोचना छोड दिया है भाई के मौन स्नेह से सारा का सारा परिवार बधा था और अब ऐसा लगता है जितना ऊचा आकाश है शायद उतनी ही नीची धरती पैर कही टिके नही है—सिर्फ सब हवा मे लटक रहे हैं कोई अदृश्य सूत्र है कब टूट जाये कुछ पता नही ऐसा क्यो होता है कि सब कुछ समेटने वाले हाथ पसरे रह जाते हैं भाई के जाने से सब बिखर गये हैं—सब के दुख के अलग-अलग पैमाने हैं—भाभी के आगे बहुत बडा रेगिस्तान है और पैरो मे दायित्वो की बेडिया, अपना सब लुटा कर भी उन्हे भइया की अमानत को सम्हालना ही पडेगा—रिश्ते की यह विवशता भी कितनी कटु है लेकिन क्या जवान बेटे की अर्थी उठते देख कर तनु के मा, बाबूजी भी जी पा रहे हैं जिन्दगी के पूरे हो आये दिनो मे इतनी गहरी चोट, हाथ मे खाली पिंजडा रह गया है और धुधली आखें आकाश की ओर टग कर रह गई हैं

आठ महीने होने को आए तनु की मां भी चल बसी मा, जिन्हें होश सभालने के बाद तनु ने बहुत दुबला और कमजोर पाया मा परम्परावादी थी दुबले कमजोर शरीर मे सस्कारो की कट्टरता निभाने की मा में अद्भुत क्षमता थी हर तीज-त्यौहार पर उन्हें परम्परागत रीति-रिवाजो को निभाते देखकर यही लगता मां व्यर्थ ही इन बाह्य आडम्बरो को मान्यता देती हैं, जिससे स्वय उन्हें तथा परिवार के अन्य सदस्यो को भी कष्ट होता है लेकिन तनु जानती है उन आस्थाओं के पीछे मां की शायद एक ही भावना थी अपने परिवार के लिए शक्ति जुटाना, जो बहुत कुछ आध्यात्मिक होगी, मां चाहती थी कि उनके बच्चों में ईश्वर का भय बना रहे, और अहकार न आने पाये जिससे जिंदगी अपने आप मे सहज हो जाये, तनु ने अक्सर तर्कों के आगे मा को हारते हुए देखा था क्योंकि मां पढ़ी लिखी नहीं थी और न ही बुद्धि प्रधान लेकिन अपने हृदय की पवित्रता

मे वह बौद्धिक तर्कों को कभी भी प्रधानता नही दे सकी इसीलिए उनका व्यक्तित्व किसी के ऊपर कमाड नही कर सका व्यवहार से दुनियावी या फिल्मी सास, मा, नानी दादी का आदश नही हो सकी मा की एक बात केवल तनु को ही नही सभी भाई बहनो को बुरी लगती जब वह बच्चो की निस्सीम आकाक्षाओ को एक दायरे मे बाधने का प्रयत्न करती पता नही क्यो मा को ऐसा विश्वास था कि खुले आकाश मे बिना धरती से टिके पख फडफडाने से कोई ओर छोर नही मिलता

तनु ने मा को कभी स्वाभिमानी बने चाभी का गुच्छा लटकाए नही देखा इतना बडा बगला, पति की ऊचे ओहदे की नौकरी, घर म ढेरो नौकर चाकर के रहने पर भी मा को कभी किसी पर रौब गाठते नही देखा वे झूठे स्वाभिमान से सदैव दूर रहीं दुनिया की जिन व्यवहार कुशलताओ को प्राप्त करने म वह असफल रही, उन्ही असफलताओ ने उन्हें ईश्वर के और निकट किया अपने जीवन मूल्यो की स्थापना मे मा ने कुछ छोटी-छोटी सी आस्थाए समेट ली थी क्योकि उनका हृदय बहुत निर्मल था दोहरा व्यक्तित्व जी पाना उनके लिए सभव न था

लेकिन पिछले आठ महीने ? तनु जानती है, भाई की मृत्यु के बाद से मा की आखो मे रेगिस्तान समा गया था अपनी पूरी जिन्दगी मे जिस मा ने दुख और सुख को समभाव से स्वीकारा, वही सतुलन पूरी तरह से चकनाचूर हो गया था मा ने इतने कठोर वज्रपात के बाद भी तार्किक होकर अपने ईश्वर से यह नहीं पूछा कि तूने इतनी बडी सजा क्यो दी ? तनु जानती है, मा, एक पवित्र और ईमानदार जिन्दगी मे विश्वास रखती थी, उन्होंने इतनी बडी सृष्टि मे कोई बहुत ऊची आकाक्षा नही की लेकिन जब अपने ही टुकडे को मिट्टी मे मिलते देखा, तो मा की अपनी ही शक्ति और आस्थाओं मे जहर घुलता गया अन्दर की सहनशील शक्तियो ने विद्रोह कर दिया विषाक्त हो आई शक्तियो को भी मा चुपचाप पीती रहीं विष अन्दर उतरता रहा दैनिक दिनचर्या मे फिर भी कोई कमी नही आई ईश्वर का पूजन वैसे ही होता रहा किन्तु सहनशक्तियो का विद्रोह एक दिन उनकी मौन सवेदनाओ पर प्रश्नचिह्न अकित करता हुआ सदा-सदा के लिए शान्त हो गया

आज तनु और उसके भाई बहन एकत्रित हुए हैं लेकिन ऐसा क्यो है कि मा के जाने का दुख किसी को नही है मा जिस दुख से आहत हुई थी वही दुख सबके बीच लटक आया है तनु सभी आस्थाओ के छिन्न भिन्न हो जाने के बाद भी जानना चाह रही है क्या मा की पवित्र आत्मा को इतना बडा दुख मिलना चाहिए था ? पर शायद हर प्रश्न का उत्तर नही होता—कुछ बातें माननी ही होती हैं और शोभित ठीक ही कहता है कि अमलतास के पेड पर कलियो के गुच्छे लटकने के बाद भी अगर कलिया चिटक-चिटक कर गिरती हैं, और पेड फूलो से नही लद पाता है—तो इसका कारण नही खोजा जा सकता यही मानना होगा कि इस बार अमलतास मे फूल नही आये

○ ○

कतरन

गली नम्बर चौदह मे मुडते ही जो तीसरे नम्बर का घर है, उसमे मैडम मारिया रहती हैं मैडम मारिया के बिखरे घर म गली के बहुत से कुत्तो को पनाह मिल जाती है मैडम मारिया काफी बूढी हो चली हैं, इसलिए घर की सफाई अब उनसे हो नही पाती है मैडम मारिया को ढेर-सी कतरनें और उलझी ऊन तथा धागे जमा करने का बेहद शौक है इसी मे मैडम मारिया की खुशी छिपी रहती है मैडम मारिया की इस खुशी को शायद कोई नही जानता सब अपनी ही तरह मडम मारिया के बारे मे सोचत और कहते हैं कुछ लोगो के अनुसार मडम मारिया सठिया गई हैं तो कुछ उन्हें सिरफिरी बुढिया कहते हैं

गली मे मैडम मारिया से कोई मतलब नही रखता, न ही मैडम मारिया को किसी की जरूरत महसूस होती है अकेली एक रामकली जमादारिन है, जिसे मेम साहब पर बहुत तरस आता है और वह उनके कमरो मे झाड़ू लगा देती है

गली मे केवल रामकली ही है, जो जानती है कि कतरनो के ढेर उलझे धागे और ऊन बटोरने के पीछे महज मेम साहब का पागलपन नही है कोई गहरा दद है, जिसे कई बार रामकली समझकर भी समझ नही पाती है मडम मारिया का घर बहुत बडा है दो कमरे हैं एक छोटा-सा बरामदा और रसोई घर एक कमरा तो हमेशा बन्द रहता है मडम मारिया की असली कमाई की तिजोरी यही कमरा है इसी मे उनकी मोह-माया कैद है जिसके आसपास वह हर समय मडराती रहती हैं इस कमरे की खिडकी और रोशनदान कभी नही खुलते हैं बाहर दरवाजे पर एक बडे ताले के सग दो और छोटे छोटे ताले लटके रहते हैं इस कमरे मे जगह जगह कतरनो के ढेर, उलझे ऊन और धागो के ढेर हैं मडम मारिया अपने

इस खजाने को देर तक निहारती हैं इन कतरनो और उलझे ऊन के धागो के बीच, घण्टो तृप्त होकर बैठी रहती हैं

मैंडम मारिया गली के बच्चो को देखकर बहुत नाक भौंह सिकोडती रामकली अकसर मैंडम मारिया से पूछती, "ऐ मम साहब, काहे तुम्हे मानुस गधात है?" लेकिन मैंडम मारिया के लिए बच्चो को बरदाश्त करना बडा मुश्किल था घर के आसपास बच्चो को देखती, तो छडी लेकर दौडती गली के बच्चे भी कुछ कम न थे सवेरे जब मैंडम मारिया निकलती, तो झुड के झुड बच्चे उन्हे छेडने के लिए खडे रहते बच्चो को मैडम मारिया की अजीबोगरीब ड्रेस देखकर बडा मजा आता मैडम मारिया की एक परमानेंट ड्रेस थी, लाल छापेवाली लम्बी फ्रॉक या फिर नीले चौखाने की फ्रॉक, उसी के ऊपर वह फटा हुआ हरा स्वेटर पहनती और पैबन्द लगा काला कोट गरमियो मे स्वेटर और कोट उतर जाते, लेकिन बच्चो का कौतूहल उनके भूरे रग के उस गन्दे टोप से जुडा रहता मैंडम मारिया हर रोज टोप को सजाती उनके टोप मे हर रोज नये तरीके से रग बिरगी कतरनें लटकती और ऊन के धागो के रग बिरगे फुदने भी लटकते

सवेरे जब मैडम मारिया थैले टागे निकलती तो शुरू मे सब यही समझते थे कि मैंडम मारिया नौकरी करने जाती हैं लेकिन ऐसा कुछ नही था मैडम मारिया घर से निकलकर सीधे सिविल लाइस पहुचती वहा बदी टेलर्स की दुकान पर धरना देकर बैठ जाती नौकर आता दुकान खुलती झाडू लगाकर नौकर कतरनो का ढेर मैंडम मारिया के आगे कर देता मैंडम मारिया नौकर को बहुत बहुत आशीर्वाद देती फिर कतरनो का खजाना जल्दी-जल्दी थैलो मे भर लेती कभी कभी बहुत खुश होने पर पाच या दस पैसे भी नौकर को दे देती बेदी टेलर्स की दुकान से उठकर मैडम मारिया सरदारजी की दुकान पर जा बैठती उस दुकान का नौकर मैंडम मारिया को देखकर चिढने लगता, लेकिन मैडम मारिया उसकी, बिलकुल परवाह नही करती उन्हे मालूम था कि सरदारजी जब आएगे तब जरूर उलझी ऊन उन्हें देंगे साथ ही रुपया या आठ आना चाय के लिए देंगे

मैडम मारिया इन कतरनो, उलझे ऊन और धागो का क्या

यह भी एक रहस्य ही है यो सब यही समझते कि वह उनसे खिलौने, कुशन या टीकोजी आदि बनाती होगी लेकिन रामकली ने गली की औरतों को राज की बात बतायी है, "बुढ़िया मेमसाहब एक कमरे में ढेर-सी कतरन और उलझे धागे-ऊन जमा करती है और कंजूस बनिये की तरह अपनी इस तिजोरी को खोलकर खुश होती है"

अरसे से मैडम मारिया अकेली हैं, ये सभी जानते हैं एक दिन लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब गली नंबर चौदह में एक नौजवान मैडम मारिया का घर पूछता हुआ आ पहुंचा पता चला कि नौजवान मैडम मारिया का भतीजा है और इस शहर में नौकरी करने आया है उसका नाम रॉबर्ट है पहले तो मैडम मारिया को रॉबर्ट का आना अच्छा नहीं लगा लेकिन रॉबर्ट ने जब मैडम मारिया को उनके नये कपड़े दिखाये, खाने के लिए लाया हुआ सामान दिखाया, तब मैडम मारिया बहुत खुश हुई

रॉबर्ट ने मैडम मारिया को बहुत खुश देखकर अपना इरादा जाहिर किया, "आंटी, अब मैं तुम्हारे साथ ही रहूंगा, तुम्हारी खूब सेवा करूंगा और "

मैडम मारिया एकदम तन गयी और रूखी होकर बोलीं, "क्यों, मेरे संग क्या रहोगे?"

रॉबर्ट सकपका गया, उसने कुछ सम्हलते हुए कहा, "नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है, मैं कहीं और घर देख लूंगा दरअसल मेरे लिए यह शहर बिलकुल नया है, दो चार दिन तो मुझे "

"पर मेरे पास तो एक ही कमरा है" मैडम मारिया ने साफ जवाब दिया

"ये दूसरा कमरा भी तो " रॉबर्ट अभी कुछ और कहता कि मैडम मारिया जोर से बोली, "उसे उस कमरे को मैं हरगिज नहीं खोलूंगी तुम कहीं और अपना ठिकाना खोज लो"

बात पूरी तरह बिगड़ चुकी थी फिर भी रॉबर्ट ने एक पासा फेंका, "कोई बात नहीं आंटी, तुम्हारा ये कमरा भी खासा बड़ा है इस टूटी कुरसी को मैं बाहर रख दूंगा और अपने लिए यहीं चारपाई डाल लूंगा"

कुछ देर तक सोचती हुई मैडम मारिया बोलीं "अच्छा ठीक है लेकिन

एक शत है, तुम इस कमरे मे जाने की कभी कोशिश मत करना "

"नही, नही आटी, ऐसा कभी नही होगा तुम विश्वास रखो फिर तुम जब इस कमरे मे ताला लगाकर रखती हो, तब भला मैं कैसे जा सकूगा ? मैं तो यो भी सुबह आफिस चला जाऊगा, और शाम देर से लौटूगा "

शाम को रॉबट मारिया को टैक्सी मे बिठाकर बाजार ले गया कुछ जरूरत के बरतन, खाने पीने का सामान और एक छोटा सा पलग और कुरसी खरीदी सालो से एक ढर्रे पर चले आये घर म जो तूफानी परिवर्तन आया था, उसे मेडम मारिया बहुत अच्छी तरह पचा नही पा रही थी लेकिन विरोध कर सकें, ऐसा भी कोई कारण नही ढूढ पा रही थी रॉबट रोज सवेरे उठकर बिस्तर मे ही मैडम मारिया को चाय पहुचाता ऑफिस जाने से पहले अपने और मडम मारिया के लिए ब्रेकफास्ट तैयार करता, शाम को लौटते समय अक्सर ही खाने का ढेर सा सामान लेकर आता छुट्टी वाले दिन अपने कपडो के सग मडम मारिया के भी कपडे धो डालता ताजा सब्जी व मीट खरीद लाता और खुद ही पकाता एक दिन ऑफिस से लौटते समय रॉबट मडम मारिया के लिए दो सिली सिलायी फ्रॉक और एक स्वेटर ले आया रॉबट ने खुश होकर कहा, "देखा, आटी, मैं तुम्हारे लिए क्या लेकर आया हू अब तुम ये पुरानी फ्रॉक मत पहना करो देखो ये कितनी फट गयी है और बदरग भी हो गयी है और हा, आटी, अब तुम कतरनें इकट्ठा करने भी मत जाया करो तुम्हारी देखभाल अब मैं करूगा " रॉबट अपनी धुन मे बोले जा रहा था तभी अचानक उसे लगा जसे मैडम मारिया पत्थर हो गयी हो वह घबराकर मैडम मारिया को झकझोरने लगा, "आटी आटी तुम्हें क्या हो गया है ? तुम्हारी तबियत तो ठीक है, क्या तुम्हें ये कपडे पसद नही आये ?"

"नही, अच्छे हैं " मैडम मारिया ने बहुत थकी हुई आवाज मे कहा

'फिर जाओ, आटी जल्दी से इन्हें पहनकर तैयार हो जाओ ये देखो मैं टिकट लाया हू आज तुम्हें पिक्चर दिखाने ले चलूगा "

रॉबर्ट को कई वष पहले उसकी मा ने मैडम मारिया के बारे मे बताया था कि कसे पति द्वारा ठुकराये जाने के बाद भी बडे विश्वास के साथ

जटिल संघर्षों को सुलझाती हुई वे अपने बच्चों के लिए नये सिरे से जी रही थी बड़े होकर बच्चों के पंख भी मजबूत होते गये और एक एक करके वे भी उनसे अलग हो गये कठिन मेहनत से जुटाई संपत्ति और जीवन की सारी आस्था और विश्वास एक झटके में खतम हो चुकी थी उनकी जिंदगी कतरनों, धागों और ऊन के टुकड़ों जैसी बिखर गयी थी और वह मन में बैठे एक अनजान विश्वास के सहारे कतरनों, धागों और ऊन के ढेर को बटोरने में जुटी हुई थी उनके इसी विचित्र रहस्य को रॉबर्ट अब तक नहीं समझ पाया था

रॉबर्ट के बहुत कहने पर मैडम मारिया अब कतरनें बीनने नहीं जा पा रही थी दिन भर घर में बैठकर कभी कभी किचन में कुछ अच्छा खाना पकाती और उसे खाने की टेबिल पर सजाकर रॉबर्ट का इंतजार करती रामकली जमादारिन को भी अक्सर बचा हुआ खाना दे देती रामकली गली के हर घर में यह बात प्रचारित कर चुकी थी कि अब बुढ़िया मेम साहब का दिमाग ठीक हो गया है गली के बच्चे जरूर इस बात से दुःखी थे कि मनोरंजन का एक सुलभ साधन अब समाप्त हो गया था

बहुत जल्दी ही सब कुछ व्यवस्थित हो जायेगा ऐसी उम्मीद रॉबर्ट को नहीं थी मन ही मन वह बहुत प्रसन्न था और निश्चिंत भी उसने अपनी मां को इस सफलता के बारे में सूचना दी साथ ही यह भी कि उसकी तरक्की हो गयी है, वह जल्दी ही घर आयेगा और मेरी से विवाह करेगा मेरी को भी यहां ले आयेगा उस रात रॉबर्ट ने जब मैडम मारिया को अपने और मेरी के विवाह के बारे में बताया, तब वह कुछ नहीं बोली

अगली सुबह रॉबर्ट आफिस जा चुका था मैडम मारिया अपने बिस्तर से उठी, उन्होंने रॉबर्ट के सब कपड़े निकाले अपने वे नये कपड़े जो रॉबर्ट लाया था, उन्हें भी निकाला स्वेटरों को छांटकर एक ओर रख दिया फिर कैंची लेकर कपड़ों के ढेर के पास बैठ गयी और सभी कपड़ों की कतरन बना डाली फिर स्वेटरों को उधेड़कर उनकी ऊन के टुकड़े-टुकड़े कर डाले सारे दिन इस काम को करने के बाद उनके चेहरे पर एक विचित्र-सा आत्म संतोष छा गया वह मारे खुशी के जोर-जोर से हसने लगी तभी रॉबर्ट ने दरवाजा खटखटाया, खुशी से भागती हुई मैडम मारिया ने दरवाजा खोला

रॉबट समझ नही सका कि आखिर मडम मारिया आज इतनी खुश क्यों हैं ? मैडम मारिया रॉबट को घसीटती हुई कमरे मे ले गयी कपडो की कतरनो और उलझे ऊन के ढेर को दिखाती हुई बोली,

"देखो रॉबट, आज मैंने इन्हे घर मे ही बनाया है, मैं बाहर नही गयी थी "

रॉबट को समझते देर नही लगी कि कतरनो के इस ढेर मे उसकी कमीज की कतरनें भी हैं, उसका स्वेटर भी उधड चुका है

रॉबट गुस्से से कापने लगा उसने चाहा कि खुश हो रही आटी को झकझोर डाले और उनसे पूछे कि ये सत्यानाश उन्होंने क्यो किया है ? आखिर रॉबट ने उनका क्या बिगाडा है ? अभी रॉबट चीखना ही चाहता था कि बहुत भारी और गभीर आवाज मे मैडम मारिया बोली, "तुम यहा से चले जाओ " रॉबट हतप्रभ-सा खडा था न ही उसकी समझ मे यह आ रहा था कि उससे क्या गलती हुई है और न ही ये कि आखिर उसने मैडम मारिया के लिए इतना सब कुछ क्यो किया ? थोडी देर मे उसने अपनी खाली अटैची उठायी और चल पडा

दूसरे दिन गली के बच्चों ने देखा मैडम मारिया लाल छापवाली गदी फ्रॉक के ऊपर फटा हरा स्वेटर, पैबद लगा काला कोट पहने सिर पर गदा भूरा टोप, जिसमे गदी कतरन और फूदने लगे हैं, पहनकर जा रही थी बच्चो का मनोरजन फिर आरभ हो गया था रामकली गली मे झाडू लगाती सबसे कह रही थी, "बुढिया मेमसाहब फिर से पगला गयी हैं, जाने काहे ओका मानुस गधात है अब फिर से कतरन बटोर लागी है "

□□□